Chap-3

तृतीय - अध्याय -

"कृति - परिचय"

3· अध्याय - कृति परिचय
भाग §1§

पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि हमारे आलोच्य काल में दो प्रकार के उपन्यासकारों की कृतियां उपलब्ध होती हैं । प्रथमत: वे लेखक आते हैं , जो पूर्ववर्ती काल से सन् 1960 ई0 के बाद तक लिखते चले आ रहे हैं । द्वितीयत: वे हैं, जिन्होंने सन् 1960 ई0 के पश्चात् अपना लेखन कार्य आरम्भ किया, जो पूर्ववर्ती काल से लिखते चले आ रहे हैं,ऐसे उपन्यास-कार पूर्ववर्ती वस्तु तथा कलागत संस्कारों एवं विचारों को ग्रहण करते हुए,प्राय: परम्परागत जीवन-मूल्यों और आदर्शों के प्रति आस्थावान् रहे हैं । इन्होंने अपने उपन्यासों में युगीन समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टिकोण से परखा तो है, किन्तु उनका समाधान आदर्श मिश्रित होने के कारण प्रासंगिक नहीं बन पाया है । ऐसे लेखकों ने नये भाव बोध को परिवर्तित परिस्थितियों के साथ उभारा है , किन्तु जितनी जटिल स्थितियां, विसंगतियां, मूल्यहीनता,दिशा-हीनता तथा विद्रूपताओं का अंकन सन् 1960 ई0 के उपरान्त लेखन आरम्भ करने वाले उपन्यासकारों ने किया है , उतना वे नहीं कर पाये । अत: इनकी कृतियों में सामाजिक, व्यक्तिगत, आध्यात्मिक , राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन-मूल्यों के अंकन की भिन्नता स्वाभाविक है । उन्होंने स्वच्छन्द यौन-कुण्ठा, वर्ग-चेतना, परम्परा के प्रति विद्रोह की चेतना, वर्ण भेद का त्याग, अन्तर्जातीय विवाह, भौतिक मूल्य व्यक्तिवादी आदि प्रवृत्तियों का चित्रण तो किया है , परन्तु इनका प्रभाव जन साधारण तक नहीं पहुंच पाया था । इस विशेषता को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्याय में ऐसी कृतियों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है , जिनके लेखक सन् 1960 के पूर्व से उपन्यास रचना में संलग्न रहे हैं ।

आधुनिक हिन्दी उपन्यास में सामाजिक तथा व्यक्तिवादी दो मूल प्रवृत्तियों के चार रूप उपलब्ध होते हैं, जो समकालीन समाज में चेतना के

चार विभिन्न स्तरों के प्रतिबिम्ब हैं । सामाजिक प्रवृत्तियां व्यक्ति को समाज गत मूल्यों के लिए प्रेरित करती हैं । इसी का वैज्ञानिक रूप समाजवादी प्रवृत्ति में सम्पन्न हुआ है ।[1] दूसरी व्यक्तिवादी प्रवृत्ति में व्यक्ति सत्यों, उसके हितों तथा व्यक्तिगत मूल्यों का चित्रण रहता है और अतिशय व्यक्तिवादी होकर मनोविश्लेषणवादी प्रवृत्ति का रूप धारण कर लेती है ।[2] इस प्रकार इन लेखकों ने सामाजिक , मार्क्सवादी, व्यक्तिवादी तथा मनोविश्लेषणवादी प्रवृत्तियों से प्रभावित जीवन-मूल्यों का अंकन किया है ।

सन् 1960 के पश्चात् सामाजिक जीवन-मूल्यों का चित्रण करने वाले लेखक हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, अमृत लाल नागर, फणीश्वर नाथ रेणु, नरेश मेहता आदि आते हैं । नरेश मेहता ने बीसवीं शती के जीवन-मूल्यों का चित्रण किया है । इन लेखकों पर प्रेमचन्द परम्परा की छाप कुछ भिन्नता लिए हुए है । आज भी यह परम्परा वर्ग चेतना के रूप में परिवर्तित परिस्थितियों के साथ और युगीन भाव बोध के साथ विकासशील है । पूर्ववर्ती लेखक यशपाल मार्क्सवाद से अधिक प्रभावित थे । इन्होंने अपने उपन्यासों में काम के आधार पर अर्थगत एवं वर्गगत समस्याओं को उठाया है । रांगेय राघव भी इसी कोटि में आते हैं । देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक,सांस्कृतिक एवं राजनीति क समस्याएं उत्पन्न हो रही थीं । जिनका प्रभाव परम्परागत जीवन-मूल्यों पर पड़ना स्वाभाविक था और प्रेमचन्द परम्परावादी नैतिक मूल्य युगीन परिवेश में टूटने लगे । वे लेखक जो प्रेमचन्द काल से या बाद से लेखन कार्य में सक्रिय हैं । उनकी कृतियों पर सन् 1960 ई0 के पश्चात् मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, फ्रायड, एड्लर, युंग आदि मनोवैज्ञानिक सिद्धांत का प्रभाव विशेष रहा और फ्रायडवादी मनोविश्लेषण तथा यौन चेतना का प्रभाव भी प्रमुखर होने से जीवन मूल्यों में विकृति उत्पन्न हो गयी । जिनका चित्रण जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, डा0 देवराज, अनंत गोपाल शेवड़े, अश्क आदि उपन्यासकारों ने किया है । इन लेखकों ने टूटते हुए परिवेश में जीवन मूल्यों का समाधान आदर्शवादी दृष्टिकोण से किया है ।

प्रेमचन्द युग में सामाजिक मूल्यों को महत्व दिया जाता रहा, किन्तु युगीन परिवेश में व्यक्तिवादी प्रवृत्ति पर अधिक बल दिया जा रहा है । व्यक्तिवादी उपन्यासकारों ने स्वतंत्रत तथा युगीन भारत का चित्रण किया है । भगवती प्रसाद वाजपेयी, नागार्जुन, उपेन्द्र नाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, उदय शंकर भट्ट, लक्ष्मी नारायण लाल, राजेन्द्र यादव आदि आते हैं । संक्षेप में कहा जा सकता है कि रांगेय राघव, नागार्जुन, यशपाल आदि मार्क्स के साम्यवाद या समाजवाद से , जैनेन्द्र , जोशी, अज्ञेय आदि व्यक्तिवादी फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद और जैनेन्द्र, अश्क ,,जोशी आदि सात्र के अस्तित्ववाद से अधिक प्रभावित रहे हैं । "समसामयिक जीवन पर रचित हिन्दी उपन्यास की सामाजिक, व्यक्तिवादी, मनोविश्लेषणवादी अथवा अंतश्चेतना-वादी, समाजवादी अथवा प्रगतिवादी प्रवृत्तियों को जिन विचार-धाराओं, साहित्यिक शैलियों पाश्चात्य एवं भारतीय चिन्तकों व साहित्यकारों ने प्रभावित किया है ।"[3] इस प्रकार इन लेखकों ने युगीन उपन्यासों में परम्परा-गत विकसनशील और नये मूल्यों का अंकन किया है ।

वस्तुत: पूर्ववर्ती उपन्यासकारों ने नयी पीढ़ी की मानसिकता तनाव, मूल्यहीनता, दिशाहीनता, आक्रोश आदि का चित्रण भी किया है । शिक्षा तथा वैज्ञानिक तकनीकी विकास, पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था, मशीनीकरण व औद्योगीकरण, शहरों में बढ़ती हुई आबादी तथा आर्थिक विषमता के कारण, परम्परागत मूल्य नकारे जा रहे हैं । उच्च वर्ग की धन लोलुपता तथा सत्ता सम्पन्नता ने निम्नवर्ग को असहाय तथा मध्यम वर्ग को निराशापूर्ण, कुण्ठित, संत्रासित आदि मन:स्थितियों का शिकार बना दिया , जिनका अंकन पूर्व-वर्ती उपन्यासकारों ने किया है । उन्होंने देश की आर्थिक स्थिति, राजनीतिक धार्मिक , सामाजिक विसंगतियों पर विचार किया है और मध्य युगीन संस्कारों तथा सामन्तवादी व पूंजीवादी व्यवस्था पर गहरी चोट की है । इसके साथ युवा वर्ग की आकांक्षाओं, महत्वाकांक्षाओं, आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला है । उन लेखकों ने युगीन उपन्यासों में "अर्थ" तथा "काम" को लेकर ही मानव

मूल्यों का ह्रास हुआ है । और नैतिकता की मान्यताएं टूटी एवं आध्यात्मिक एवं धार्मिक मूल्यों का पतन सर्वाधिक दृष्टिगोचर है ।

बुजुर्ग उपन्यासकारों ने युवा वर्ग की मानसिकता तथा कुंठा का चित्रण "अनंतर" उपन्यास में किया है - "युवक अपना अस्तित्व चाहता है । बुजुर्ग का अस्तित्व उसकी राह रोके है ।"[4] पूर्वयुगीन साहित्यकार युवा वर्ग के जीवन की नई परिस्थितियों से भली-भांति परिचित है । किन्तु पूर्ववर्ती लेखक आदर्शवादी दृष्टिकोण को उसके समक्ष रखता है । "किन्तु जिस आदर्शवाद में युवा पीढ़ी को विश्वास नहीं है । इसीलिए सामसियक उपन्यास में जीवन को देखने का एक नया दृष्टिकोण मिलता है ।"[5] मनो वैज्ञानिक सामयिक उपन्यासों में उसके मन को खोजा है । उसकी बौद्धिक चेतना ने परम्परागत मूल्यों को नकारा है । व्यक्तिवादी उपन्यासकारों ने फ्रायड, एडलर, युंग की अस्तित्ववादी विचार धारा को महत्व दिया है । युगीन परिवेश में मध्य-वर्गीय स्त्री-पुरुष दोनो की उच्छृंखलता का चित्रण शिक्षित नारी का उभरता हुआ, नया व्यक्तित्व , दाम्पत्य जीवन में पड़ती हुई दरारें, सेक्स संबंधों, विवाह संबंध विच्छेदों, वैवाहिक जीवन में असंतोष ,ऊब, अजनबीपन, असम्बद्धता, विद्रूपताओं का सम्यक चित्रण, जितना युगीन लेखकों की कृतियों में मिलता है , उतना पुराने खेमे या पूर्ववर्ती लेखक, करने में असमर्थ रहे हैं , क्योंकि उनका परम्पराओं तथा आदर्शों व संस्कारों के प्रति किसी न किसी रूप मोह बना रहा है । अत: नया युग, नयी शिल्प विधि के साथ आया । अमृतलाल नागर का "अमृत और विष" महाकाव्यात्मक शैली का है । इसी प्रकार द्वितीय कोटि के शिव प्रसाद सिंह का "अलग अलग वैतरणी" और विश्वम्भर नाथ उपाध्याय का "रीछ" इसी शैली के अन्तर्गत आते हैं । अश्क का "शहर में घूमता हुआ आइना" फ्लेश बैक पद्धति, आदि नयी शैली के रूप में आये हैं । युगीन परिवेश में मध्यम वर्ग की टूटन का चित्रण सर्वाधिक है और इसी वर्ग ने जीवन-मूल्यों की भी सबसे अधिक तोड़ा है , कहीं जोड़ा है । शिक्षा और विज्ञान तथा औद्योगीकरण के विकास ने परम्परागत मूल्यों को नकारा है ।

यहाँ हमने साठोत्तर युग की उन प्रधान कृतियों का चयन किया है, जो पूर्ववर्ती लेखकों द्वारा लिखी गई हैं । वे जीवन-मूल्यों की दृष्टि से उपयुक्त हैं और जिनमें युग बोध तथा परिवर्तित परिस्थितियों के साथ बदलते हुए जीवन-मूल्यों की चर्चा हुई । इन कृतियों का जीवन मूल्यों की दृष्टि से विवेचन किया जा रहा है :-

(1) अपने- अपने अजनबी (1961)

"अज्ञेय" की शेखर :एक जीवन" स्वातंत्र्य पूर्व की रचना है । "नदी के द्वीप" स्वातंत्र्योत्तर और "अपने अपने अजनबी" साठोत्तर युग की रचनाएं हैं । "अपने अपने अजनबी" में साठोत्तर युग के जीवन-मूल्यों का अंकन मिलता है । लेखक ने अपनी कृतियों में भय, कुण्ठा, तनाव और सेक्स को मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्ति के आधार पर चित्रित किया है ।

"अपने अपने अजनबी" उपन्यास में कथा वस्तु नहीं के समतुल्य है । डा० राम दरश मिश्र के शब्दों में - " इस उपन्यास में मनोविज्ञन और अस्तित्ववाद दोनों का सुन्दर समन्वय है या यों कहा जाए कि अस्तित्ववादी दर्शन सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से उभारा गया है ।"[6] इसमें अस्तित्ववाद के अनीश्वरवादी दर्शन को प्रतिष्ठित किया गया है चार्वाक का लोकायत दर्शन नहीं है । उपन्यास में याके, सेल्मा, पाल, जगन्नाथन आदि पात्र हैं तथा याल सहायक पात्र हैं । इसके पात्र क्षणवादी तथा अस्तित्ववादी विचारधाराओं से भरे हुए हैं । योके और सेलमा मृत्यु को ही सत्य मानते हैं । और वे एक दूसरे से अजनबी बने रहते हैं । उनमें आत्मीयता की भारी कमी है । इसीलिए योके बुढिया सेल्मा की गर्दन घोंटना चाहती है । उसकी "स्व" की भावना परोपकार, सद्भाव तथा मैत्री के मूल्यों को नकारती है । उसके मन में ईश्वर और मृत्यु को लेकर शंका बनी रहती है । "अगर ईश्वर मृत्यु का ही दूसरा नाम है तो मैं उसे क्यों मानूं -- मृत्यु एक झूठ है क्योंकि वह जीवन का खण्डन है ।"[7] योके ईश्वर को भ्रामक मानती है ।[8]

इस उपन्यास में अज्ञेय ने व्यक्ति चेतना और सैद्धान्तिक आधार पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए उसे अस्तित्ववादी और क्षणवादी नये विचारों की कसौटी पर परखा है । इस उपन्यास पर यूरोपीय जीवन का प्रभाव है । इसी कारण इसके संबंधों में आत्मीयता, मानवता तथा सद्भाव की कमी है । यूरोपीय जीवन के प्रभाव से भोगवादी, क्षणवादी, मृत्यु की आशंका, जीने की चाह, अजनबीपन, अकेलेपन आदि दुर्बल प्रवृत्तियों का जन्म हुआ । इसी से ही आधुनिक सभ्यता तथा आधुनिक जीवन संबंधित है । यदि "अपने अपने अजनबी" जीवन पर व्यंग्य तथा विद्रूपता आई है तो आज के मानवीय जीवन पर और यूरोपीय जीवन पर व्यंग्य है । आज के जीवन पर करारी चोट है । इसीलिए लेखक ने यूरोपीय जीवन को अपने उपन्यास का आधार बनाया । इस स्थिति में "अपने अपने अजनबी" का जगन्नाथन् जैसा अच्छा, संयमी, नेक पात्र भारत की सभ्यता और संस्कृति दे सकता है । वह यूरोपीय जीवन से संबंधित योके नहीं है । अत: इस उपन्यास की भूमिका यूरोपीय है क्योंकि दोनों महायुद्ध जर्मन की देन है । योके जगन्नाथन् पात्र को भला, सज्जन एवं नेक कहती है । इससे बोध होता है कि यूरोपीय जीवन मौके को वेश्या बना सकता है तथा भारतीय जीवन अच्छाई, भलाई, परोपकारी ,शान्ति जैसे जीवन मूल्य प्रदान कर सकता है ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि योके और सेल्मा का जीवन, भयभीत, मृत्यु आशंका ग्रस्त, व अजनबी बना रहता है । यह अजनबी तथा अकेलेपन की भावना उनके जीवन-मूल्यों को कुंठित तथा संक्रमित कर दिया है । उनके जीवन में कोई आदर्श नहीं , परोपकार तथा पारस्परिक के मूल्य नहीं हैं । मृत्यु की आशंका में प्रतिमान तथा संकल्प मूल्य टूट रहे हैं । उनके लिए मृत्यु ही सद्वस्तु है , अच्छाई, शान्ति ,विनय , प्रेम सदभावना तथा नैतिकता जैसे शाश्वत मूल्यों का योके तथा सेल्मा के जीवन में कोई महत्व नहीं है । वे यूरोपीय जीवन के परिवेश में टूटते हैं । जगन्नाथन अच्छाई, सदभावना, ईमानदारी शान्ति तथा प्रेम व आदर्श का प्रतीक है । यूरोप में बढ़ती हुई

वैज्ञानिक सभ्यता ने मानव मूल्यों को नकारा है । वैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों की सृष्टि हुई । विज्ञान की उत्पत्ति व प्रगति ने मानव सभ्यता में विकास किया है । जो परम्परागत जीवन मूल्यों की परिवर्तन में उत्तरदायी हैं । यह कहा जा सकता है कि अज्ञेय ने अस्तित्ववादी तथा क्षण वाद विचारधाराओं का अंकन "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में किया है । व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्ति चेतना के बिम्बों को , वैज्ञानिक अणुवाद के युग में मृत्यु को सत्य ईश्वर को असत्य माना है । जीवन के दर्द को अनुभव किया । पारिवारिक तथा सद्भावना व परहित के मूल्यों को नकारा गया है । अत: पाश्चात्य परिवेश के कारण ही भारतीय जीवन मूल्य टूटे हैं उनके स्थान पर नये मूल्य स्थापित नहीं हो पाये ।

2- "नदी फिर बह चली" (1961)
" हिमांशु श्रीवास्तव"

"नदी फिर बह चली" उपन्यास हिमांशु श्रीवास्तव की सर्वश्रेष्ठ कृति है । इस उपन्यास में ग्रामीण तथा शहरी जीवन के बदलते जीवन-मूल्यों का साठोत्तर युग के संदर्भ में ~~प्रकट~~ चित्रित किया गया है । साठोत्तर युग में ग्रामीण मूल्यों में इतना बदलाव नहीं आया था, जितना शहरी जीवन में आ चुका था, इसी तथ्य को उपन्यासकार ने अपने प्रमुख पात्रों परबतिया व जगलाल के माध्यम से प्रस्तुत किया है । परबतिया ग्रामीण परिवेश में पली भोली-भाली ~~प्र~~परम्परागत संस्कारों से युक्त युवती होती है । उसका पिता महतो पहली पत्नी के मरने पर दूसरी शादी कर लेता है , तो परबतिया की दूसरी मां उसे बहुत यातनाएं देती है । बाद में परबतिया की शादी शहर में नौकरी (ट्रक ड्राईवर) कर रहे युवक जगपाल के साथ हो जाती है । और वह गांव से शहर आ जाती है । किन्तु शहर के उन्मुक्त वातावरण में उसका व्यक्तित्व भिचा-भिचा सा रहता है । वह तो ग्रामीण संस्कारों व दायरों में सिमटी रहती है जबकि उसका पति जगपाल शहरी स्वच्छंद वातावरण का आदि होता है । वह शराब पीता है ,जुआ खेलता है और परबतिया

से भी अपेक्षा रखता है कि वह भी उसके मित्रों- गुलाब और नथ्थू के साथ , मुक्त व्यवहार करे और , उनके सामने श्रृंगार करे । किन्तु परबतिया इसे सहज रूप से नहीं स्वीकार पाती । इसलिये वह अनेक विसंगतियों, तथा कुंठा की शिकार हो जाती है । और जगपाल भी कुण्ठा, तनाव व हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है । एक दिन वह छुरा मारने के अपराध में जेल चला जाता है , और परबतिया के जीवन में नया मोड़ आता है ।

बाद में, ग्रामीण परबतिया सभी तरह की यातनाएं व सबकी प्रताड़ना सहती हुई जागरूक नारी के रूप में उभरती है । मजदूर संघ बनाकर नेता भी बन जाती है और लोगों द्वारा (पात्र सरदार) भारत माता की बेटी और गाँव की बेटी की संज्ञा मिलती है ।

इसप्रकार लेखक हिमांशु श्रीवास्तव ने साठोत्तर युग के परिवेश में टकराते ग्रामीण व शहरी मूल्यों को चित्रण तो किया है साथ ही आर्थिक, राजनैतिक, व फैशनपरस्ती के कारण टूटते परम्परागत मूल्यों का चित्रण भी किया है । परम्परागत संस्कारों से युक्त भारतीय नारी समाज द्वारा सताने पर या आर्थिक संकट तथा राजनीति के कारण सामाजिक मूल्यों को नकारने लगी है । पहले वह विवश होकर स्वीकारती थी (परबतिया) किन्तु अब वह स्वतंत्र रूप से व सहज रूप से स्वीकार कर रही है ।

इसप्रकार यह उपन्यास नारी जागरूकता का चित्रण करता है । यद्यपि इसमें व्यक्तिगत चेतना के साथ- साथ सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व परम्परागत सभ्यता व संस्कृति को भी स्वीकार किया गया है ।

(3) "यह पथ बंधु था" 1962.

श्री नरेश मेहता का "यह पथ बंधु था" उपन्यास बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन-

मूल्यों एवं मान्यताओं पर आधारित है । इस उपन्यास में संयुक्त परिवार के अन्तर्द्वन्द्वन तथा आर्थिक तनाव का यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है । लेखक ने मालवा के एक छोटे कस्बे के अत्यंत साधारण शिक्षक श्रीधर ठाकुर के माध्यम से परम्परागत जीवन मूल्यों के प्रति आस्था व्यक्त की है । श्रीधर ठाकुर के भीतर कोई बड़ी महत्वाकांक्षा या प्रेरणा नहीं है । न ही वह व्यवहारिक एवं दूरदर्शी ही है । इसी कारण वह किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है । फिर भी उसमें आत्म सम्मान और गहरी नैतिकता है । इसीलिए वह अपने द्वारा रचित एक इतिहास में संशोधन करने से इनकार कर देता है , क्योंकि यह एक अनुचित प्रस्ताव होता है , और उसे स्वीकार करना उसे अपने आत्म सम्मान के विरूद्ध लगता है और वह नौकरी से त्याग-पत्र दे देता है । वह अपने संयुक्त परिवार , जो उसी के ऊपर निर्भर रहता है , का भरण-पोषण न कर पाने की ग्लानि के कारण चुपचाप घर छोड़कर चला जाता है ।

श्रीधर घर छोड़कर कभी इन्दौर ,कभी काशी भटकता है , परन्तु उसे कहीं शान्ति और सफलता नहीं मिल पाती । उसके घर छोड़ने के पश्चात , श्रीधर की पत्नी सरस्वती जेठानी व जेठ की यातनाएं सहती हुई वह युग विशेष की नारी की करूणा व पीड़ा सहती रहती है । मूक संवेदना के साथ सारी यातनाओं को भाग्य का लिखा समझकर सहती है । वह संस्कार युक्त ,भारतीय नारी है । सरस्वती के माध्यम से लेखक ने परम्परागत भारतीय नारी के स्वरूप एवं उसके आदर्शों की सफलत अभिव्यक्ति की है । सही माने में सरस्वती इस उपन्यास का सशक्त पात्र है , जबकि श्रीधर लिजलिजा, पलायन-वादी व डरपोक व्यक्ति है । केवल सरस्वती ही बूढ़े सास-ससुर व बेसहारा अपने बच्चों को आजीवन संभाले रहती है ।

नि:संदेह नरेश मेहता यथार्थो-मुख लेखक हैं , उन्होंने भारतीय समाज में होते आये , नारी पर अत्याचारों तथा यातनाओं का चित्रण किया है । श्रीधर और सरस्वती आदर्शवादी तथा संस्कारों से मुक्त हैं । इनके अतिरिक्त

अन्य पात्र भी हैं जो नैतिक-अनैतिक के बीच संघर्षरत हैं । इस उपन्यास में "इन्दु" संस्कारयुक्त नारी है , जबकि कमला-स्वच्छन्द विचरों की आधुनिका है । वह विशन के साथ चुपके से शादी कर लेती है किन्तु बाद में पिता के कहने पर तथा साहस की कमी के कारण शादी तोड़ देती है । इस प्रकार इस उपन्यास के सभी पात्र - इन्दु, कमला, विशन, रत्ना, आदि सभी पात्र अन्दर से टूटे, अस्थिर व गतिहीन हैं । ये सभी एक ही साँचे में ढले नज़र आते हैं ।

लेकिन इन के होते हुए भी नरेश मेहता का "यह पथ बन्धु था" संस्कार शीलता व भारतीय परम्परागत मूल्यों की रक्षा करने में सफल रहा है । परिवार की मान मर्यादा के लिए अपने अस्तित्व को मिटाने वाले सरस्वती, श्रीधर आदि भारतीय मूल्यों को अन्त तक स्वीकार करते रहते हैं । आत्म-सम्मान, नैतिक आचरण, बन्धुत्व, परोपकार आदि मूल्य इस उपन्यास में चित्रित हुए हैं । यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर वातावरण को उद्घाटित करता है । प्राचीन भारतीय परम्परागत जीवन-मूल्यों का चित्रण आज के परिवेश में हुआ है ।

§4§ सामर्थ्य और सीमा §1962§

भगवती चरण वर्मा के स्वातंत्र्य पूर्ण चित्रलेख, स्वातंत्र्योत्तर भूले बिसरे चित्र, और साठोत्तर सामर्थ्य और सीमा हैं । प्रश्न और मरीचिका आदि उपन्यास प्रमुख हैं । लेखक ने साठोत्तरीयुग के बदलते हुए परिवेश में व्यक्तिगत, समाजगत ,आर्थिक, आध्यात्मिक तथा राजनैतिक जीवन-मूल्यों का चित्रण किया है । इस युग में जितना व्यक्तिगत सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक नैतिक तथा आर्थिक मूल्यों में परिवर्तन आया , उतना स्वातंत्र्योत्तर युग में नहीं आया । यह काल मूल्य टकराहट और मूल्य संक्रान्तिकाल है । बदलते हुए दृष्टिकोणों तथा प्रतिमानों व आदर्शों का चित्रण यथार्थ रूप से चित्रण किया है ।

उपन्यास की कथावस्तु सुमन नगर क्षेत्र की विकास योजना पर आधारित रोहणी नदी से संबंधित है । उसकी विनाश लीला से वहाँ का व्यक्ति विक्षुब्ध है । लेखक ने व्यक्ति के विज्ञानवाद पर नियतिवाद की सत्ता को स्थापित किया । जहाँ व्यक्ति का विज्ञान भले ही हार जाय, परन्तु उसकी बौद्धिक चेतना यह हार स्वीकार नहीं कर सकती है । "सामर्थ्य और सीमा" में सन् 1962 के आसपास की राजनीति का चित्रण है । राजनीतिक पैतरेबाजी, राजनीतिज्ञों का निजी स्वार्थ , उनकी चुहलबाजी ,दलबदल नीति, नये गठ-बंधन आदि से मध्य वर्गीय मानसिक तनाव और कुण्ठा उसकी बुद्धिवादी प्रवृत्ति का चित्रण है । प्रशासन की भ्रष्टता, नौकरशाही वृत्ति में रिश्वतखोरी ने प्रजातंत्र के मूल्य, मानवता, शान्ति, मैत्री, सहिष्णुता, सद्भाव,परोपकार व कल्याण के मूल्यों को नकारा है । इस युग के वातावरण में मूल्यहीनता, दिशाहीनता, तथा अनुशासनहीनता सर्वतः दृष्टिगोचर है । व्यक्ति स्वातंत्र्य, नारी स्वातंत्र्य आदि मूल्यों को अर्थ और काम के आधार चित्रित किया है ।

जहाँ एक ओर भाई चारे, सहयोग, समाजसेवा का भाव है तो दूसरी ओर जोखनलाल जैसा भ्रष्ट नेता जनता को झूठे आश्वासन देकर उनसे धन लूटता है । वह आगामी चुनाव जीतने के लिए धन इकट्ठा करता है । विलासतापूर्ण जीवन बिताना उनका लक्ष्य बन गया है । पूंजीवादियों का लक्ष्य अपनी तिजोरियाँ काले धन से भरना है । चाटूकार वर्ग विदेशों में भ्रमण करना अपना लक्ष्य समझता है । देवलंकार निःस्वार्थ सेवा के रूप में जनता के समक्ष आता है, किन्तु देश सेवा का भाव त्या कर विदेशों में और भ्रमण करते । मेजर नाहर सिंह रावी मान कुमारी के यौवन में ही अपना जीवन समर्पित करने की अभिलाषा में है । नये परिवेश के साहचर्य में व्यक्ति चेतना का विकास हुआ । व्यक्ति चेतना ने स्वच्छंद सेक्स वृत्ति को बढ़ाया दिया तथा अर्थ-व्यवस्था ने उसे झकझोरा, इससे पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में विघटन हुआ । नये जीवनादर्श तथा जीवन-धर्म का उदय हुआ ।

उपन्यास के "सामर्थ्य" भाग में स्वाधीन भारत के राष्ट्रीय विकास , उससे संबंधित योजनाओं तथा योजनाओं से संबंधित स्वार्थों का यथार्थ चित्रण है । यही कारण है कि लेखक ने साठोत्तरी युग बोध को आर्थिक मूल्यों से संपृक्त किया । और यह सिद्ध किया है कि इस युग में व्यक्ति की मूल समस्या अर्थ है । अर्थोपलब्धि ही उसका जीवन-मूल्य है । अर्थ व्यवस्था ने आज के व्यक्ति पारिवारिकजीवन में अनेक विकृतियों तथा विद्रूपताओं उत्पन्न की है । महानगरीय जैसे पारिवारिक जीवन में न तो कोई संबंध रहता है और न ही इतना आकर्षण ही, उनके जीवन में अर्थ संग्रह में व्यस्त रहता है । इससे परम्परागत जीवन-मूल्य टूटे । उच्च वर्ग के लोगों मे अर्थगत आधार पर व्यक्तिगत क्षेत्र में भौतिकवादी, सुखवादी तथा भोगवादी बन गयी है । मध्य वर्ग उनके बीच में पिस रहा है ।"रूपया ही देवता, चरित्र, प्रतिष्ठा, सम्मान तथा रूपया सब कुछ है ।"[9] रूपया के बोझ में व्यक्ति दब रहा है । उसकी नैतिक मान्यताएं टूट रही हैं, उसका चरित्र विखंडित हो गया है । व्यक्ति चेतना आर्थिक आधार पर सनिष्ट रूप में विकसित है । आज व्यक्ति का लक्ष्य है स्वंय खाओ और दूसरों को खिलाओ ।[10] जोखनलाल नेता मिलकर लूटता है । देश का कमजोर वर्ग कमजोर हो रहा है । धनी वर्ग धनी बन रहा है । देश में नेताओं का नारा राजनीति बन गया है ।

साठोत्तरी युग का व्यक्ति सेठ मकोला के रूप में सरकार को लूटता है । मिनिस्टर जोखनलाल सेठ को । सरकार लूट भीरही है । लुट भी रही है । नेता जोखन लाल, सेठ मकोला, ज्ञानेश्वर राव, मंसूर , शर्मा आदि सभी का चरमलक्ष्य है अर्थोपलब्धि । ये एक दूसरे के हितैषी ,शुभचिन्तक, सहयोगी तथा मित्र हैं । गरीब जनता को इनके ऊपर आशाएं हैं । जनता को दिखाने के लिए देश में राष्ट्रीय विकासत तथा उद्योगिक विकास करके असंख्या शिक्षक लोगों को रोजगार मिलना । समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करवा और कहते हैं व्यक्तिगत पूंजीवादियों के हाथ में देश की अर्थ व्यवस्था नहीं

नहीं सौंपना चाहिये । इससे राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है किन्तु यह दिखाने मात्र है । वे देश को पूंजीवादी व्यवस्था को अपनी पूंजी के बल पर अपने व्यक्तियों को शासन व्यवस्था में लगाये रखते हैं ।[11] यह स्थिति संपूर्ण देश में परिव्याप्त है । राष्ट्र को भाषण दिये जाते हैं उनमें "त्याग, बलिदान, कष्ट बड़े प्यारे और खूबसूरत शब्द"[12] दृष्टिगोचर होते हैं । किन्तु जनता के लिए न भलाई और न कर्तव्य था, जोखन लाल जैसे नेता को वास्तविक जीवन से "कोई मतलब नहीं होते।"[13] इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र देश को रूस और अमेरिका के समतुल्य बनाना चाहता है । पूंजीवाद, समाजवाद, मालिक मजदूर, जमींदार किसान सभी में समन्वय की भावना रखते हैं किन्तु समन्वय कहां है ? मेजर नाहर सिंह भी बोतल में बंद सुरा तथा रानी मानकुमारी के मदमस्त यौवन में बंद सुन्दरी के मध्य जीना चाहता है। नेताओं, शासकों तथा उनके चम्मचागीरों ने देश की हालत को बिगाड़ा, जनता को दिखाने के लिए त्याग, बलिदान, धर्म , जाति आदि की बातें करते हैं । किन्तु भरते हैं अपना घर । जनता का महत्व उनकी आंखों में नहीं है । लोग पैसे पैसे पर बिकते हैं एक गुलामी से निकलकर दूसरी गुलामी में फंस गये ।[14]

अत: साठोत्तरी के बाद का व्यक्ति की नैतिकता मर गयी है । अनुशासनहीनता, असंतोष, निराशा, संत्रास, अराजकता, जमाखोरी तथा बेरोज़गारी का वह शिकार हो गया है । रानी मानकुमारी के दाम में चरित्र कहां है ? चरित्रहीनता में परम्परागत जीवन-मूल्य विघटित हैं । अर्थगत आधार व्यक्ति आत्मकेन्द्रित, भोग चेतनावादी प्रतीत होता है । अहं, काम, कुण्ठा से पीड़ित है । लेखक फ्रायड के सिद्धान्त के आधार पर परम्परागत जीवन मूल्यों का चित्रण किया है । नये परिवेश में "सामर्थ्य और सीमा" उपन्यास के मूल्य परिवर्तन है । उपन्यास में प्रेम, सेवाभाव, व्यक्ति स्वातंत्र्य, समानता, सहयोग आदि मूल्यों का अंकन हुआ है । अर्थ का समान वितरण, मानवता, व्यक्तिप्रतिष्ठा आदि समसामयिक जीवन-मूल्य की चर्चा की गई है ।

5- "प्रश्न और मरीचिका" (1962)

"प्रश्न और मरीचिका" में भगवती चरण वर्मा ने स्वाधीनतापूर्व तथा स्वाधीनता के पश्चात् के मानवीय जीवन की विविध समस्याओं, संगतियों-विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का चित्रण किया है । सामाजिक विसंगतियों और विद्रूपताओं के साथ, बदलते हुए धार्मिक, भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीति के जीवन-मूल्यों को प्रस्तुत किया है । लेखक ने युवावर्ग के परिवर्तित व्यक्तिगत दृष्टिकोण, गतिशीलता एवं स्थिरता, विभक्त देश की तज्जनित मानसिकता, कुण्ठाओं, यातनापूर्ण भटकती मरीचिका में व्यक्ति जीवन का यथार्थ चित्र खींचा है । उपन्यास में उदय और सुरैया दोनों ही अलग धर्म, अलग जाति और अलग देश की भावनाओं से प्रेरित होते हैं फिर भी दोनों परस्पर प्रेम करते हैं । इस सेक्स स्वातंत्र्य भावना से पारिवारिक संबंधों के मूल्य टूटते हैं । वे दोनों हिन्दू मुसलमान की भावना को त्यागकर केवल प्रेम करते हैं ।[15] वे धर्म और जाति को बदलतने को उद्यत हैं । उदय हिन्दू मुसलमान समस्या, साम्प्रदायिक दंगे, और जाति-पांति की भावना को अंधता और अर्थहीन की संज्ञा देता है ।[16] शिवलोचन, रूपा, जनार्दन, मेलाराम, शफी, सोफ, गार्डनर, लता प्रेमिला, प्रेम मदान, रेवा, अमरजीत, कान्ता, मंजीत आदि पात्र व्यक्तिक चेतना के विचारों तथा भावनाओं से परिव्याप्त हैं । ये व्यक्तिगत स्वातंत्र्य, स्वार्थ महत्वाकांक्षा, मानसिक कुण्ठाओं एवं तनावों की स्थिति में जीते हैं ।

"प्रश्न और मरीचिका" में सामाजिक यथार्थ स्थिति का चित्रण वैयक्तिक स्तर पर किया गया है । लेखक ने व्यक्ति-स्वातंत्र्य, बंधुत्व, समानता, न्याय, प्रेम, यौन संबंध को आज की मूल्यों में रखा, और समाज में उनका विशेष महत्व न होने के कारण व्यंग्य विद्रूप का चित्रण है । यही व्यंग्य विद्रूपता की स्थिति बदलते हुए जीवन-मूल्यों की ओर संकेत करती है । इसमें

अस्तित्व की भावना निहित है । ऐसी स्थिति में लेखक ने नवीन एवं प्राचीन मूल्यों का द्वन्द्व दिखाया है । वैचारिक दृष्टि से भगवती चरण वर्मा की बुद्धिवादी हैं । इसलिए बदलते हुए व्यक्तिगत मूल्यों में रूपा, कान्ता, सोफी गार्डनर, लता, उदय, अमरजीत आदि पात्रों का भिन्न दृष्टिकोण है । रूपा एक ऐसी नारी है जो रूपया के लिए अपने चरित्र को शिवकुमार जैसे व्यापारी के हवाले कर देती है और उसके साथ अवैध रात बिताकर उसकी रूपयों की थैली को चुरा लाती है ।[17] वह राजनैतिक जीवन में नैतिक मूल्यों को अस्वीकारती है । वह भौतिक मूल्यों को अधिक महत्व देती है ।[18] उदय और देशवबाई के जीवन में स्वच्छंद यौन वृत्ति है नैतिकता एवं चारित्रिकता नाम की वस्तु नहीं है । प्रेम मदान और मंजीत स्वतंत्र यौन संबंध रखने से उनका पारिवारिक जीवन नष्ट होता है । पारिवारिक संबंधों में नैतिक मान्यताओं को स्थान नहीं देते हैं । वे जीवन में केवल रूपया को महत्व देते हैं । उपर्युक्त पात्रों के जीवन में भोगवादी, सुखवादी तथा भौतिकवादी दृष्टि है । ये प्राचीन जीवन-मूल्यों को अर्थहीन समझकर नकारते हैं । यहाँ धर्म, ईमान, जाति, सत्य चरित्र सभी रूपयों में बिक रहा है । स्वतंत्र भारत में झूठ, फ़रेब, समाज के खोखलेपन असंतुष्ट नयी पीढ़ी और त्रिसित पुरानी पीढ़ी के जीवन-मूल्य हैं । नयी पीढ़ी आथथाहीन, लघु परिवार, सिद्धांतच्युत गौरव और मूल्यमर्यादा से हीन है । मेलाराम धार्मिक आध्यात्मिक मूल्यों को स्वीकारता है ।

"प्रश्न और मरीचिका" में भारत विभाजन के समय हिन्दूओं और मुसलमानों के साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन है । जो वर्षों से उनके साथ रहते थे एक दूसरे के दुख दर्द में सम्मिलित होते थे उनका व्यवहार पाकिस्तान बनने की घोषणा के बाद पाशविकता में बदल गया । व्यक्तिगत धार्मिक संकीर्णता, राजनीतिक विचारधारा और विभिन्न मतों का चित्रण है । हिन्दू एवं मुस्लिम के सामूहित तथा वैयक्तिक संस्कार, उनके आचारों-विचारों, प्रतिमानों, आदर्शों, चरित्र तथा आचरणों का चित्र उपस्थित है । धर्म के

प्रति उनकी झूठी या सच्ची प्रतिबद्धता, मान्यताओं के विभाजन और नैतिक-अनैतिक मूल्यों का टकराव तथा मूल्य मर्यादाओं की टूटन आदि का चित्रण हमारे समक्ष स्पष्ट है ।

उपन्यास में व्यक्तिवादिता के स्थान पर वैयक्तिक स्वातंत्र्य के मूल्य भी निहित हैं , उदय इसका अच्छा उदाहरण है । व्यक्तिवादी प्रवृत्ति सीमित संकीर्ण और आत्मोन्मुख है और वैयक्तिता सर्जनात्मक है जो समस्त मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर अपने व्यवहार एवं चरित्र को मर्यादित करती है । व्यक्तिगत जीवन-मूल्य भोलाराम तथा शिवकुमार शर्मा के जीवन में प्रस्तुत हुए हैं । ये आदर्शों एवं सत्य के लिए उत्सर्ग हैं ।

"प्रश्न एवं मरीचिका" के लेखक ने बदलते हुए सामाजिक दृष्टिकोण , नये युगबोध साथ मध्यवर्गीय एवं उच्च वर्गीय लोगों के आचार-विचार , सांस्कृतिक परम्पराओं, समाजगत एवं व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य में बाह्य और आन्तरिक जीवन में अंकन किया गया है । मूल्यहीनता, दिशाहीनता तथा पथहीनता का वर्णन है । आज़ादी के पश्चात् प्रबुद्ध वर्ग का ध्यान समाज के पीड़ित शोषित वर्गों की ओर गया किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण सीमित रहा । यशवन्त निम्नवर्ग का नेता है । वह मजदूरों तथा श्रमिकों में नयी चेतना तथा स्फूर्ति लाता है ।[19] समाजवादी मूल्यों को समाज के समक्ष उपस्थित करता है । मार्क्सवादी विदेशी प्रभाव भारतीय समाज पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित है । उदय नयी पीढ़ी का व्यक्ति है । उसे समाज का प्रत्येक व्यक्ति बदलता हुआ नजर आता है । क्योंकि आज का व्यक्ति नैतिक,धार्मिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं को भौतिक मूल्यों के आवरण में देख रहा है ।[20] सामाजिक वर्गों के नये प्रतिमान उभर रहे हैं, जो राजनैतिक परिवेश की देन हैं । जातीयता तथा व्यक्तिगत भावना ने जीवन-मूल्यों को तोड़ा ,साम्प्रदायिकता की भावना ने सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों की मान्यताओं को भग्न किया ।

लेखक ने समाज के नव शिक्षित मध्यम वर्ग में नये विचार तथा नयी मान्यताओं को उद्घाटित किया है । लता अपने पिता तथा परिवार के न चाहने पर लव मैरिज करती है । बाद में एडजस्ट न होने पर तलाक दे दती है । वह पुराने संबंधों को तोड़ती है । इसके अतिरिक्त इसमें मानवीय जीवन की अनेक समस्याओं तथा अर्थगत विषमताओं का चित्रण मिलता है जिसमें जीवनगत सद्वस्तु की खोज की गई है । साथ ही अनेक धार्मिक एवं आध्यात्मिक विश्वासों को परिष्कृत रूप में लेखक ने प्रस्तुत किया है । उदय और सुरैया, लता और अंजनीकुमार, मंजीत और प्रेमनाथ मदान आदि संकीर्णता, से परे जातिगत और हिन्दू मुसलमान के भेदभाव को स्वीकार नहीं करते हैं । जहाँ समाज में नये वर्ग, नयी जातीयता, तथा नये जीवन-मूल्य विकसित हो रहे हैं, वहाँ सामाजिक परम्पराओं ,आदर्श, नैतिकता, मान्यताओं को पूर्णत: त्यागने में हिचकिचाहट भी है । नये मूल्य पूरी तरह से प्रतिष्ठित नहीं हो पाये हैं । समाज में नारी चेतना ने तलाक संबंधी नये मूल्य और प्रेम विवाह के नये दायरों एवं आयामों को बढ़ाया है । वह आदिकाल की नारी नहीं रही है । इस नारी चेतना तथा वैयक्तिक चेतना ने असामाजिक तत्वों को परिष्कृत रूप दिया है । कुल मर्यादा तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा के मूल्य टूटे । नारी-चेतना ने आर्थिक समस्या को सुलभ बनाने के लिए आदि जाव्य नारी को घर से बाहर कदम रखने पर विवश किया । आधुनिक शिक्षिता की प्रतीक लता और मंजीत कौर हैं । जो न तो सामाजिक मूल्यों को स्वीकारती हैं और न ही पारिवारिक मूल्यों को । नारी की आर्थिक स्वतंत्रता ने परम्परागत नैतिक मूल्यों एवं मान्यताओं को परिवर्तित किया । इस बदलते हुए नये परिवेश ने पारिवारिक संबंधों में तनाव और विघटन की स्थिति का निर्माण किया ।

"प्रश्न-मरीचिका" उपन्यास में पूंजीवादी व्यवस्था को स्वीकारने वाले शिवकुमार हैं ।[21] भौतिकवादी, पूंजीवादी सभ्यता के विकास ने आर्थिक आधार पर भारतीय परिवार में आन्तरिक संघर्ष , कुण्ठा, निराशा

खोखलेपन तथा अकेलेपन को बढ़ाया । पारिवारिक विघटन, वर्ग संघर्ष साम्प्रदायिक विग्रह, परम्पराओं का बौद्धिक मूल्यांकन तथा अन्य विसंगतियों का चित्र भारतीय जनजीवन मे व्याप्त हैं । शिवकुमार भ्रष्ट व्यापारी, विलासी, बेईमान है , जो राष्ट्रीयता के झूठे मुखेटों के बीच खद्दरधारी पूँजीपति के रूप में , अपना स्वार्थ , आराम, तथा अस्तित्व खोजता है । जो समस्त भारतीय व्यापारी तथा पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । स्वतंत्र भारत में नौकरशाही, सत्ताधारी एवं नेताशाही ने जमींदार और सामन्तशाही का स्थान ले लिया है ।

"प्रश्न और मरीचिका" उपन्यास में समस्त राजनीतिक प्रवृत्ति का वर्णन है । साठोत्तरी युग राजनीति मोह भंग का युग है । राजनीति ने व्यक्ति, परिवार, समाज, गाँव, शहर तथा राष्ट्र को बदल दिया है । युगीन राजनीति इतनी भ्रष्ट एवं स्वार्थपूर्ण हो गयी है कि देश का प्रत्येक प्राणी कूनीतिज्ञ हो गया है । उपन्यास में राजनीतिक पहलुओं का विशद वर्णन हुआ है । उदयराज, भोलाराम, लता, रूपा शर्मा, शिवलोचन शर्मा आदि पात्र आये हैं । जो केवल राजनीतिक लक्ष्यों की पूर्ति नहीं करते, वरन् प्रेम, विवाह, सामाजिक दायित्व , आचार,विचार, आचरण व्यवहार तथा सामूहिक एवं वैयक्तिक संस्कार इत्यादि मानवीय जीवन के अनेक पक्षों को उद्घाटित करते हैं । राजनीतिक क्षेत्रों में साठोत्तरी नेता महात्मा गाँधी वादी जीवन-मूल्य तथा उनेके आदर्शों की दुहाई देते हैं [22] और कार्य आत्मसिद्धि, आत्मरति के लिए करते हैं ।[23] रूपा शर्मा समाज सेविका एंव कांग्रेस की मेम्बर है वह अर्थ के लिए शरीर बेचती है । चुनाव लड़ती है । मंत्री पद तक पहुँचती है । इससे पारिवारिक मूल्य टूटते हैं । शिवलोचन शर्मा कांग्रेस पार्टी छोड़कर सोशलिस्ट पार्टी से चुनाव लड़ता है । रूपा शर्मा राजनीति को धन कमाने तथा एक पेशा का साधन मानती है ।[24] राजनीति ने साम्प्रदायिकता की भावना को प्रभावित कर मानवता, तथा वसुधैव कुटुम्ब की भावना को नष्ट कर दिया है । राजनीतिक क्षेत्र में नेताओं की कुत्सित

स्वार्थ नीति, उनके झूठे त्याग ,तप एवं संयम का पर्दाफाश , राजनीतिक हड़तालों की सत्यता, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, पद-लोलुपता, रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी आदि कुत्सित अभिवृत्तियों एवं नैतिक चारित्रिक विघटन का चित्रण लेखक ने बड़ी सावधानी से किया है । साथ युगीन परिवेश में व्यक्ति मन को परखा है ।

अत: प्रश्न और मरीचिका में व्यक्ति चेतना ने नये विचार, नये जीवन-दर्शन तथा नये जीवन-मूल्य उपस्थित किये । सुरैया ,लता एवं मंजीत प्रगतिशील नारी का प्रतीक हैं । उदय अंजनीकुमार प्रेमनाथ मदान आदि नयी पीढ़ी के प्रतीक हैं जो असामाजिक तत्वों को त्यागने में योगदान देते हैं । राजनीतिक क्षेत्र में आर्थिक विषमता, टूटन, घुटन, नेताशाही जीवन की भर्त्सना, युवावर्ग में चेतना, सम्मिलित परिवार व्यवस्था में टूटन, बदलते हुए संवैधानिक मूल्य सभा पंचायत आदि की चर्चा लेखक ने बदलते हुए युग संदर्भ में किया है । और राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर पर व्यक्ति और समाज के टूटते हुए संबंधों का चित्र प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है ।

6- आखिरी आवाज़ (1962)

जैसाकि हम द्वितीय अध्याय में कह चुके हैं कि साठोत्तर पूर्व युगीन नवीन मूल्यों तथा व्यक्ति चेतना का आभास मात्र काल था, किन्तु हमारा आलोच्यकाल मूल्य विघटन व्यक्ति स्वातंत्र्य और व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों का काल है ।

"आखिरी आवाज" में वैयक्तिक स्तर पर काम या यौनवासना को महत्व दिया गया है । साठोत्तर युग में व्यक्ति चेतना तो निहित है किन्तु आर्थिक कठिनाईयों ने गांव के व्यक्ति की कमर तोड़ डाली है । उसकी ईर्ष्या और दाह ने साठोत्तर भारत में जन्म ले लिया है । गांव का जीवन अपनी मौलिकता, सौम्यता तथा भाईचारे व सदभाव को त्याग रहा है ।[25] डूमरपुर गांव में ऐसा सब कुछ परिलक्षित है । इस गांव का सरपंच

चंवल सिंह का पुत्र नारायन और कनौरी पंच का पुत्र माधो रमोना हाई स्कूल के छात्र हैं । एक दिन गांव आकर वे हिरदैराम की लड़की के साथ बलात्कार करके व उसकी हत्या करके रमोना भाग जाते हैं । आरोप लगाने पर हिरदैराम की बार बार पिटाई होती है । अदालत में न्याय का नाटक खेला जाता है । नेताओं, वकीलों, अफसरों, पुलिस, सरपंचों और उसके पिछलग्गूओं को हथकण्डे उसे बार बार निराश बनाते हैं । तत्पश्चात् वह आत्महत्या कर लेता है किन्तु पाप का घड़ा भरने पर फूटता ही है । सरपंच का लड़का नारायन माधो की हत्या कर देता है । उसके बाद वह भी आत्महत्या कर लेता है । निहाल कौर नारायन और माधो के दुराचार में साथ देने वाली भी, पागल हो जाती है । अत: साठोत्तर के पश्चात् के गांव से आदर्श, सद्भाव, परोपकार ईमानदारी, भलाई, सच्चाई, सत्य, न्याय आदि सभी नष्ट हो जाते हैं । लेखक ने जीवन-मूल्यों तथा आदर्शों की पुनर्स्थापना पर बल दिया है।

यह उपन्यास व्यक्तिवादी प्रवृत्ति और व्यक्ति चेतना, स्वच्छंद यौन-वासना पर आधारित है । आधुनिक छात्र प्राचीन मूल्यों को ताक में रखकर असंयमी, दुराचार तथा अनैतिक प्रवृत्ति को महत्व देते हैं । वे दोनों सामन्ती भोगवादी, सुखवादी, विलासी आदि अभिवृत्ति के नवयुवक हैं । वे अल्प आयु में ही चरित्रहीनता की ओर बढ़ते हैं । उनका भविष्य दिशाहीन है । निहालकौर वैशौर्यावस्था को भी पार नहीं कर पाती है । उसका स्वच्छंद जीवन यौन पिपासा के लिए अशांत बना रहता है । लड़की की हत्या का कारण वही है । वह अनेक नेताओं, अफसरों तथा गांव लोगों द्वारा भेजी जाती है । व्यक्तिगत स्तर पर ग्रामीण जीवन में न तो नैतिकता रह गयी है और न धार्मिकता सभी कुछ " आखिरी आवाज" में टूट रहा है ।

इस उपन्यास का सामाजिक जीवन व्यक्तिगत दाह, वैमनस्य, विद्वेष, आपसी मनमुटाव आदि से भर गया है । साठोत्तर के गांव के समाज में सहयोग, प्रेम, सद्भाव, सहृदयता, निश्छल वातावरण नहीं रहा है ।

पारिवारिक सामाजिक तथा नैतिक मूल्य व्यक्ति-चेतना, यौन वासना तथा अर्थगत विषमताओं के कारण टूट रही है । उनके संबंध , सामाजिक रीति-रिवाज तथा मानवता भावना टूट रही है । गांव के समाज में सेवाभाव, त्याग, न्याय, परोपकार ,परहित आदि के मूल्य टूट रहे हैं । उपन्यास में तिवाड़ी गोविन्द ऐसे पात्र हैं जो समाज की भलाई व कल्याण की भावना को बाह्य परिवेश में लेकर चलते हैं । सेवाभावी, सज्जन और परोपकारी देखने मात्र बने रहते हैं । इसके भीतर काम तृप्ति का खेल खेलते रहते हैं । उपन्यास में सामाजिक जीवन मूल्य केवल बाह्य परिवेश में अंकित हैं ।

साठोत्तर के ग्राम्य जीवन शहरी, वैज्ञानिक तथा शिक्षा का प्रभाव पड़ रहा है । इस प्रभाव में वे अपना शांत तथा सौम्य जीवन खो रहे हैं । इसमें साथ राजनीतिक चेतना से डूमरपुर गांव गतिशील है। वहां सरपंच, नेताओं वकीलों, मंत्रियों आदि की भीड़ लगी रहती है । चुनाव जीते जाते हैं । पुलिस तथा गुंडागिरी की सहायता ली जाती है । गांव के सभी वर्ग चेतना शील हैं । वहां पर सामाजवादी नारा लगाया जाता है । फिर भी गांव के गरीब किसानों, खेतिहार व मजदूरों पर अत्याचार राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में होते हैं । हिरदैराम की पुत्री के साथ बलात्कार व हत्या राजनीति बन जाती है । वह कोर्ट में न्याय के लिए जाता है तो अफसरों, वकीलों, सरपंचों का भ्रष्टाचार उसका मार्ग रोक देता है । उसकी "आखिरी आवाज़" है - " मुझे बचाओ, मेरी बेटी को बचाओ, उसकी मासूम अस्मत से खिलवाड़ के करने वाले, उसे बिना किसी अपराध के धरती से मिटा देने वाले अपराधियों को दण्ड दो, मेरी मौरूसी जमीन पर मुझे कब्जा दिलाओ ।"[26] स्वाधीन देश में पहले जैसा वातावरण गरीबों के लिए भरा पड़ा है । ईमानदारी ,पर-हित, साहचर्य, सद्भाव, भाईचारे, सहयोग हादि के मूल्य टूट रहे हैं । गांव के तिवाड़ी जैसे नेता, बंदूक की नोंक पर वोट लेता है ।[27] अहिंसा और सत्य व समाज सेवा का नारा देता है । नेता बनने से पहले वह "औरत भगाता था, बेचता था, औरतें"[28] आज आदर्श सेवक बन गया है । प्यारेराम एम॰एल॰ए॰

कत्ल केस में रिश्वत लेता है । न्यायाधीश से लेकर पुलिस तक भ्रष्टाचार समाया हुआ है । गांव वालों को पुलिस हण्टरों ,तमाचों, लात-घूंसों से मारती है ,[29] पुलिस ही नहीं अदालत, वकील ,नेता आदि गांधी और नेहरू के अनुयायी गरीब जनता को लूटते हैं ।

अत: हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज व्यक्तिगत, समाजगत, आध्यत्मिक तथा नैतिक व राजनैतिक मूल्य अर्थ व काम कुण्ठा के आधार पर टूट रहे हैं । अर्थगत आधार पर वृत्तिपरक होकर राजनीतिक प्रशासनिक,सामूहिक क्षेत्रों में "अपने" व "स्व" की भावना में, जीवन-मूल्य प्रभावित हैं । ईमानदारी सच्चाई व भलाई हैडमास्टर में थी, तो उसका तबादला कर दिया जाता है । निष्कर्ष यह है कि गांव के परिवेश में परम्परागत जीवन-मूल्य परिवर्तनशील हैं । लेखक ने परम्परागत जीवन-मूल्यों तथा आदर्शों का भी अंकन किया ।

7- "शहर में घूमता आईना"(1963)

उपेन्द्रनाथ अश्क को यथार्थवादी उपन्यासकार की संज्ञा दी जाती है । उन्होंने "गिरती दीवारें"(1947) में परतंत्र भारत के जीवन मूल्यों का चित्रण किया है । "शहर में घूमता आईना" सामाजिक जीवन-मूल्यों का चित्रपट है । जिसमें व्यक्तिगत जीवन स्तर पर आन्तरिक तथा बाह्य जीवन-संघर्ष परिव्याप्त हैं । लेखक ने आज के भाव बोध पर जीवन-मूल्यों को चित्रित करने का प्रयास किया है । इसी प्रकार "एक नन्ही क्रिन्दील"(1969) में मध्यम वर्गीय चेतन के द्वारा मानवीय जीवन विवशताओं, विषमताओं आदि का अंकन किया है ।

अश्क ने अपने उपन्यास में आधुनिकता की चुनौती को समाज के बदलते हुए,जीवन-मूल्यों को व्यक्तिवादी चेतना के आधार पर परखा है । उनकी नवीन जीवन-दृष्टि, अर्थगत स्तर पर, व्यक्तिगत सत्य को उद्घाटित करती है । और उन्होंने व्यक्ति जीवन तथा संसार का मूल्यांकन व्यक्तिगत आधार

पर किया है । "शहर में घूमता आईना" उपन्यास का चेतन गर्म राख पर बिछे पत्थर-अल-पत्थर पर अपने पांव रखता हुआ जिन्दगी की पुर-पेच राहों[30] में घूमता रहा है । वह अतीत की राहों को आज भी अनुभव करता है ।[31] वह उन बीती राहों पर चलता हुआ निम्न मध्यवर्गीय चेतन, शहर में घूमता आईना ही बन गया है ।[6] चेतन वह आईना है,जो जलंधर में घूमता है"[32] उसका जीवन सेक्स और आर्थिक, मानसिक तनाव तथा कुण्ठाओं से आक्रान्त है । वह अपनी कुण्ठाओं, निराशाओं तथा घुटन भरे जीवन से दूर भागना चाहता है कि "कहीं ऐसी जगह जाय जहाँ उसका मन नीला के विरह, अपनी पीड़ा, अमीचन्द की डिप्टी-कलक्टरी और उसके संदर्भ में अपनी हीनता के अहसास को एकदम भूल जाये"[33] चेतन की वेदना नीला के प्रसंग में उभरती है और अपने आत्मविकास के संदर्भ में डिप्टी कलेक्टर अमीचन्द ~~कक~~ से तुलना करता है तो वह आत्महीनता की भावना से भर जाता है । यह प्रवृत्ति उसे ~~पलायन~~ पलायनवादी बना देती है । निःसन्देह इस उपन्यास में चेतन प्राचीन जीवन-मूल्यों को तोड़ने की बात सोचता है।

"अश्क" ने इस उपन्यास का आधुनिक दृष्टि से अंकन किया है । आधुनिकता का बोध नगरीकरण की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है । नगरीकरण एवं औद्योगीकरण , ने मानव मूल्यों को परिवर्तित किया । चेतन आधुनिक भाव बोध के कारण ही प्राचीन परम्परागत जीवन-मूल्यों को तोड़ने की बात सोचता है । "समाज की परम्पराओं को तोड़ने की बात उसके मस्तिष्क में आती है - अथवा बौद्धिक बनने के लिए उसका चेतन मस्तिष्क उसे ऐसा सोचने को मजबूर करता है । किन्तु कायरता उसे निष्क्रिय बनाती है । सामाजिक प्रतिष्ठा का मोह उसे संचालित रखता है ।"[34] उपन्यास में व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि के आधार पर असामाजिक तत्वों तथा विकृतियों को उठाया गया है । चेतन पुराने तथा नये विचारों के द्वन्द्व में घूमता हुआ अशक्त, बेबस, और असहाय व्यक्ति का प्रतीक है । आधुनिक बोध के कारण व्यक्ति मोह भंग का उपन्यास है ।

"शहर में घूमता आईना" में अश्क ने मध्यम वर्ग के बदलते हुए व्यक्तिगत दृष्टिकोण ,स्वच्छंद यौन वृत्ति, हीनभावना तथा आत्मविकास के मूल्यों का वर्णन किया है । उपन्यास के चेतन, अनंत, हुनर, हकीम दीनानाथ पात्रों का एक ही मूल्य है कि महान् बनना । साथ ही लक्ष्य की पूर्ति न होने पर मानसिक तनाव, और कुंठा ,घुटन तथा ईर्ष्या से भर जाते हैं । "अश्क" ने समाज की मान्यताओं , धार्मिक विश्वासों, रीति-रिवाजों, तथा लोक-मान्यताओं को आधुनिक मानदण्डों के धरातल पर मापा है । व्यक्ति मौनवृत्ति को कामू की आधुनिकता के आधार की दृष्टि से परखा है। उपन्यास के पात्र कामातुर, यौन से पीड़ित दम्भी, मिथ्याभिमानी उत्तरदायित्वहीन, अकर्मण्य ,धोखेबाजी अवसरवादी, कायर तथा स्वार्थी वृत्तिपरक हैं । ये पात्र जीवनगत परि - स्थितियों में उलझकर जीवनदर्श को स्वीकार नहीं करते हैं । आत्म केन्द्रित होने के कारण आत्मविकास में लिप्त हैं । यह प्रवृत्ति व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों की ओर संकेत करती है । "अश्क" के "शहर में घूमता आईना" मुख्य पात्र चेतन निम्न मध्यवर्गीय है । वह, दरिद्रता, क्षुद्रता, हीनता तथा संकीर्णता की अभिवृत्तियों में फंसा हुआ निराश होकर रात्रि में पत्नी के वक्ष में मुंह रखकर शान्ति पाता है । चेतन अपने "सम से संतुष्ट है।"[35] वह दु:ख दर्द तथा असंतुष्ट जीवन परिस्थियों को बिना आक्षेप के ग्रहण करता है । उपन्यास की विशेषता है कि "अनेक पात्र, अनेक स्थितियों ,अनेक घटनाएं ,अनेक गलियों, तथा मुहल्ले, अतीत और वर्तमान, इसी शिल्प से जुड़ सकते हैं थे और जुड़े हुए हैं । उपन्यास के क्षेत्र में इसे एक नवीन प्रयोग - सफल प्रयोग कहा जाना चाहिये ----- इतने अल्पकाल में इतना देखना और दिखाना इस आईने की सफलता है ।"[36]

"अश्क" ने ऐतिहासिक, आत्म कथात्मक , आदि परम्पराएं तथा रेखाचित्र संस्मरण, पूर्वदीप्ति इत्यादि नवीन शैलियों का सम्पन्न चित्रण किया है । लेखक ने वर्ग चेतनावादी,व्यक्तिवादी तथा मार्क्सवादी जीवन दर्शन तथा

जीवन-मूल्यों को अर्थगत आधार पर, मानवीय यौन कुण्ठाओं को व्यक्ति चेतना के रूप में उठाया है । चेतन आर्थिक समस्याओं से पीड़ित होकर सामाजिक जीवन-मूल्यों को तोड़ने की बात सोचता है । यह आधुनिक बोध है । इस आधुनिक बोध की प्रक्रिया में मूल्यों की अराजकता, तथा जीवन की निरर्थकता के प्रति आत्म समर्पण , और जीवन की बदलती हुई विविधि परिस्थितियों के कारण ही नये जीवन-मूल्यों का विकास हुआ है । यही कारण है कि अश्क का चेतन युग परिवेश के साथ साथ नवीन जीवन-दृष्टि के अनुरूप आदर्श, प्रतिमान तथा आचार-विचार को अपनाना चाहता है । जो कि अश्क आधुनिकता की चुनौती को बदलते हुए सामाजिक जीवन-मूल्यों को काम कुण्ठा तथा अर्थगत चेतना के आधार पर व्यक्ति के माध्यम से स्वीकार किया है ।

अत: यह कहा जा सकता है कि चेतन आधुनिक भाव बोध के कारण ही परम्परागत जीवन-मूल्यों को तोड़ने की बात सोचता है लेकिन उन्हें अपने जीवन में आत्मसात् नहीं कर पाता है । इसलिए इस उपन्यास में युगीन पूर्व जीवन-मूल्यों का अंकन हुआ है न कि साठोत्तर युग के जीवन-मूल्यों के भाव भूमि पर ।

8- "बारह घण्टे"(1964)

यशपाल कृत उपन्यासों में मनुष्य के रूप, "झूठा सच"(दो भाग) आदि स्वाधीनता के पश्चात् बदलते हुए जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में लिखे गये हैं । साठोत्तरी युग के उपन्यासों में , "बारह घण्टे", "क्यों फंसे", और "मेरी तेरी उसकी बात"(1975) है जिनके पात्र व्यक्तिगत काम कुण्ठा, जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं और अकेलेपन की भावना से संत्रस्त हैं । वैज्ञानिक कारणों तथा औद्योगिक विकास से सामाजिक जीवन-मूल्य, आर्थिक तथा व्यक्तिवादी विचारधारा के आधार पर टूटते हुए परिलक्षित हैं । वैयक्तिक

स्वतंत्रता ने मानव-समानता मूल्य पर जोर दिया है । परिणामत: व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में विचारने का अवसर मिला । यशपाल ने "दायित्व" तथा दायित्व संयुक्त वैयक्तिक स्वातंत्र्य मूल्यों की स्थापना की है । वे वर्ग संघर्ष को प्रमुखता देते हुए प्राचीन नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को चुनौती देते हैं । वे समाज में समाजवादी, साम्यवादी तथा मानववादी जीवन-मूल्यों को ग्रहण करते हुए भौतिक मूल्यों को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के आधार पर स्थापित किया है । वे नारी के प्राचीन मूल्यों - ब्रह्मचर्य और पातिव्रत्य को नहीं मान्यता देते हैं ।

यशपाल ने "बारह घण्टे" में सेक्स से संबंधित नर-नारी के मानसिक तनाव व कुण्ठा को उभारा है । इस उपन्यास के पात्र काम भावना से पीड़ित होकर और व्यक्तिवादी विचारधारा से प्रेरित होकर, सामाजिक जीवन-मूल्यों को तोड़ते हैं । उपन्यास के पात्र बिनी और जेनी दो चचेरी बहनें, पामर, लारेंस और फैण्टम् हैं । डी0वाई0एस0पी0 लारेंस का मित्र और पामर जेनी का पति है । इसमें विधवा बिनी और फैण्टम् विधुर की साथी के अभावग्रस्त बेदनात्मक एवं स्वाभाविक संवेदनशील और एक दूसरे की सहानुभूति की कथा है । बिनी की एक उपील है । "बिनी को प्रेम अथवा दाम्पत्य निष्ठा निर्वाह न सकने या कलंक देने का निर्णय करते समय, किसी के व्यवहार को केवल परम्परागत धारणाओं और संस्कारों से हीन देखें । उसके व्यवहार को नर-नारी के व्यक्तिगत जीवन की आवश्यकता और पूर्ति की समस्या के रूप में तर्क तथा अनुभूति के दृष्टिकोण से मानव में व्याप्त प्रेम की प्राकृतिक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में भी देखें ।"[37] और कहते हैं कि "किसी के व्यवहार को केवल संस्कारगत नैतिकता के विश्वास से ही नहीं, आधुनिक परिस्थिति बोध से प्रेरित चिन्तन से भी देखने का यत्न करें ।"[38]

यशपाल के "बारह घण्टे" में नर-नारी का शाश्वत काम चेतना का आधुनिक परिस्थिति बोध से प्रेरित चिंतन है । वे यहाँ प्राचीन नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को नये परिवेश में त्याग देते हैं । वे मानवतावादी

मूल्यों के आग्रही जान पड़ते हैं और वे स्त्री पुरूष की भावुकता और सहानुभूति को यथार्थवादी आधार पर देखते हैं । नर-नारी के वैयक्तिक एवं स्वच्छंद जीवन की जरूरतों के साथ व्यक्ति में व्याप्त स्वाभाविक प्रेम की समस्याओं को नये भाव बिन्दुओं में उद्घाटित किया है ।

बिनी ग्यारह मास पूर्व पति के साथ नैनीताल आती है और पति की मृत्यु के बाद पति की समाधि पर फूल चढ़ाने आती है । लौटते समय उसकी मुलाकात विधुर फैण्टम् से होती है । वह उसे अपने "दायित्वबोध से परिचित कराती है ।[39] कब्रिस्तान में मृत पत्नी के लिए आंसू बहाते फैण्टम् के प्रति सहानुभूति होने तथा एक साथ रिक्सा में आने से दोनों का प्रेम विकसित होने लगता है । वे नर-नारी के शाश्वत प्रेम तथा व्यक्तिगत जीवन के उत्तरदायित्व को भी समझते हैं , तथा सहानुभूति और आत्मीयता का अनुभव करते हैं । फैण्टम् कहता है "मैं चाहता हूं सामान्य व्यक्ति की तरह मनुष्य के कर्तव्य को निबाहूं, पर मुझे सामान्य व्यक्ति की तरह खड़े हो सकते का सहारा चाहिये"[40] और "बिनी का हृदय विधुर फैण्टम् की व्यथा को देखकर सहारा देने के लिए उमड़ आया था ।"[41] लेकिन उन्हें सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती ।बिनी का फैण्टम् के घर रात भर रहने से जेनी उन्हें कुत्ते कुतिया की संज्ञा देती है । और सहानुभूति को पाखण्ड मानती है ।[42] विवाह ईश्वर की इच्छा से होता है । और प्रेम आत्मिक संबंध है ।

लारेंस उदारवादी होने के कारण बिनी और फैण्टम् के संबंध जो वैयक्तिक जीवन की पूर्ति आवश्यकता एवं तृप्ति का मूल्य मानता है , लेकिन वह संस्कारगत नैतिक मूल्यों से परे आधुनिक परिवेश में काम कुण्ठा को शारीरिक आवश्यकता मानता है । जेनी से वह कहता है कि "रोमी तो चला गया . परन्तु बिनी जीवित है । रोमी को याद करके वह प्रेम के सहारे की आवश्यकता को अनुभव करती है ------ बिनी सावित्री की तरह फैण्टम् में सत्यवान या रोमी को पुन: पा रही है ।[43]

यशपाल मानवीय मूल्यों के उपन्यासकार हैं । वह मानवीय संवेदनाओं को व्यक्तिगत सेक्स के आधार शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति स्वीकारते हैं । यौन वृत्ति की चेतना की तृप्ति में प्रेम और वासना में अन्तर दिखाया है । समाजवादी मूल्यों का प्रतिपादन किया है । व्यक्तिगत नये दृष्टिकोण परम्पराओं के बंधन को विच्छेद करते हैं । उपन्यास में मानसिक तनाव व कुण्ठा तथा निराशा को बिनी और फैण्टम् के रूप में अभिव्यक्त किया है । लोक-विश्वास, सामाजिक बंधनों तथा परम्पराओं के टूटन के भाव व्यक्ति चेतना के रूप में अभिव्यक्त हैं ।

अत: बारह घण्टे में व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों के अंकन में सामाजिक नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को चुनौती भौतिकवादी आधार पर दी गयी है । साहचर्य, सहानुभूति ,सद्भाव, स्त्री-पुरूष का आकर्षण ,सात्विक मूल्यों की स्थापना की है और पातिव्रत्य तथा शारीरिक पवित्रता को नये भाव बोध में महत्वहीन समझा है । अत: लेखक ने मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने में सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को स्वीकार कियाहै । परम्परागत नैतिक मूल्यों पर चोट की है । और नयी सभ्यता तथा संस्कृति की प्रतिष्ठा करके समाजवादी जीवन मूल्यों का अंकन किया है । यह विशेषता इस उपन्यास में परिलक्षित है कि इसमें नारी स्वतंत्रता तथा उसके प्रति सद्भाव दिखाते हुए परम्परागत प्राप्त जीवन-मूल्यों पर चोट की है । इसमें फायड्वादी यौन कुण्ठाओं तथा मानसिक तनाव के आधार पर सहानुभूति, सहयोग तथा साहचर्य के मूल्यों का अंकन किया है । दोनों एक दूसरे के अभाव को समझकर ही सहानुभूति और आत्मीयता उत्पन्न हो गयी । बिनी यह सोचकर अपना सिर उसके कंधा पर रख देती है और फैण्टम् की व्यथा को सहारा देने के लिए उसका भाव उमड़ आता है । इसमें अतृप्त व्यक्ति की काम कुण्ठाओं और आवश्यकताओं की माध्यम दो जीवितात्माओं का मिलन है । मानवता, करूणा,दया,सद्भाव आदि मूल्यों का अंकन भौतिकवादी दृष्टि से किया है और युगीन जीवन-मूल्यों का अंकन हुआ ।

9- "काला जल" (1965)

शानी कृत "काला जल" उपन्यास में निम्न मध्यवर्गीय दो मुसलमान परिवारों के विघटन, उनकी यातनाओं, विसंगतियों और व्यक्ति टूटन की कथा है । यह उपन्यास साठोत्तर युग के जीवन प्रश्नों, मूल्य संघर्षों और सतत सामाजिक संबंधों के टूटते हुए रिश्तों के साथ पारिवारिक बदलते हुए मूल्यों का चित्रण करता है । जिसे तीन पीढ़ियों की कथा द्वारा प्रस्तुत किया गया है । ये परिवार नई पुरानी पीढ़ियों के संघर्ष या उनकी चेतना की टकराहट का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, बल्कि मोहसिन के आने पर टकराहट तथा घुटन का आभास होता है । लेखक ने मुस्लिम परिवारों के माध्यम से उनके आदर्शों आचारों-विचारों, प्रतिमानों तथा संकल्पों का अध्ययन बड़ी गहराई से किया है । उनके परिवारों के विघटन में , जो "काला जल" फैला है । उसे बड़े एहसास के साथ चित्रित किया है ।

व्यक्तिगत मूल्यों के आधार पर मिर्जा करामत बेग , रोशन ,सल्लों, आप्पा, रज्जूमियां, बी-दारोगीन, फूफी सोफिया, बब्बन के मां-बाप आदि आते हैं । लेखक ने आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न उनकी वेदना और विकृतियों की तीव्रता का अंकन किया है । समस्त पात्र व्यक्ति स्वातंत्र्य, की भावना से प्रेरित होकर, आत्मविकास चाहते हैं । किन्तु ये पात्र जीवनगत परिस्थितियों घिरे रहते हैं । इसीलिए युगीन परिवेश वे आतंक, अकेलेपन, निराशा, भय आदि की छाया में रहते हैं । उनमें पारिस्परिक मूल्य नहीं, सदभाव, त्याग, परोपकार तथा सहयोग की भावना टूट रही है । ये सब बब्बन के परिवार में परिलक्षित जोते हैं । यहां लेखक सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत जीवन की विषमताओं ,विसंगतियों तथा विद्रूपताओं पर ध्यानाकर्षित करता है । जहां परिवार में आत्मीयता, सहानुभूति,परस्पर सौहार्द्र, व सहृदयता रहती थी, वे आर्थिक संकट के कारण टूट रहे हैं । नये जीवन मूल्यों का विकास इस उपन्यास में नहीं दिखाया है ।

सामाजिक जीवन-मूल्यों का पतन आर्थिक विषमता से तो है ही, इसके साथ व्यक्ति अंह व "स्व" की भावना के कारण भी है । लेखक ने व्यक्तिगत चेतना के माध्यम से राष्ट्रीय भावना, व देश प्रेम को लेकर राजनीति का सफलता के साथ चित्रण किया है । मोहसिन राजनीति में सक्रिय भाग लेता है । यहां तक कि घर वालों तथा हैडमास्टर से मार भी पड़ती है । वह नायडू के साथ सामाजिक और राजनीतिक कार्य करता है । नायडू इस संघर्ष में टूटता है, और अंत में मर जाता है । मोहसिन नौकरी छोड़कर ,सामाजिक और राजनीति के विसंगतियों की ओर संकेत करता है । लेखक ने समाज की विसंगतियां और विद्रूपताओं की सकेर चित्रण सही माने में किया है और दिखाया है कि आधुनिक निम्न वर्ग के परिवार का जीवन अनेक विडम्बनाओं का शिकार रहता है ।

यह कहा जा सकता है कि उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर पूर्व जीवन-मूल्य का चित्रण करता है । परिवेश आधुनिक हैं जिसमें एक परिवार के विघटन और सेक्स समस्या को व्यक्तिगत, सामाजिक स्तर पर मापा गया है । राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में परिवार व व्यक्ति टूटन की कथा है । उपन्यास में नये संबंध ,दायित्व बोध, सद्भाव, आपसी सहयोग, सहानुभूति राष्ट्र-प्रेम, अच्छाई, सच्चाई, बिरादरी समस्या, ईर्ष्या और प्रतिष्ठा की भावना का चित्रण मिलता है । परन्तु आर्थिक विषमता के साथ परिवार विघटन और आपसी संबंध टूटते हैं । दाम्पत्य जीवन में जब और युगीन परिवेश में स्त्री पुरूष की काम समस्या का चित्रण "अर्थ" के आधार पर किया है । अतः यह उपन्यास नये परिवेश के विभिन्न चित्र प्रस्तुत करता है ।

10- "अमृत और विष"(1966)

"अमृत और विष" उपन्यास के अलावा "बूंद और समुद्र" (1959), ये कोठे वालियां(1961),महाकाल(1947) मानस का हंस(1972) आदि उपन्यासों में युगीन परिवेश से संबंधित जीवन-मूल्यों का अंकन किया है । महाकाल और बूंद और समुद्र में स्वतंत्रता के पश्चात् के जीवन-मूल्यों का चित्रण बड़ी गहराई से किया है । किन्तु "अमृत और विष" नि:संदेह नवीन और पुराने के बीच द्वन्द्वात्मक जीवन-मूल्यों का उल्लेख करता है , जो मूल्य सन् 1960 के पूर्व प्रतिष्ठित हो रहे थे, उनको समाज में नि:संकोच नयी पीढ़ी का युवक ग्रहण कर रहा है । लेखक ने आदर्शवादी मूल्यों के आधार पर नये मूल्यों के कारणों का चित्रण किया है ।

"अमृत और विष" उपन्यास अमृतलाल नागर ने औपन्यासिक शिल्प भाष, नैतिक, राजनीति ,समाज, प्रेम आदि से संबंधित मान्यताओं का अच्छा चित्रण किया है । उपन्यास में अमृत है,विष भी है । इसमें नयी पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी का संघर्ष प्राचीन मूल्यों का विघटन और तरूण वर्ग के नये विचारों को नयी दृष्टि से परखने का प्रयास है । अमृत और विष में तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक हलचल, संस्कृति, अर्थनीति, नैतिक, अनैतिक पक्ष और विभिन्न वर्गों के उत्थान पतन का संकेत है । इस उपन्यास में अरविंदशंकर पदमनाम प्रकाशक से एक उपन्यास लिखने के लिए दो हजार रूपया लेता है , किन्तु निश्चित अवधि में उपन्यास पूरा न होने के डर से कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर वह उपन्यास लिखता है । उपन्यास में स्वतंत्र भारत के दो नवयुवक विवाह प्रबंध की चिन्ता से ग्रस्त हैं, उनकी आशाओं, आकांक्षाओं, तथा कुंठाओं का चित्रण , नयी पीढ़ी का चित्रण है । अरविंदशंकर अपने जीवन की परिस्थितियां, परिवार, स्वजनों, पूर्वजों और युगीन युवावर्ग के आन्दोलन आदि को आत्मकथाके रूप में लिखता है । यह एक मध्यमवर्गीय जीवन की बनती बिगड़ती और टूटती जिन्दगी की आत्मकथा है । यह युगीन परिवेश के साथ परिकल्पना के संदर्भ तक सीमित है ।

"अमृत और विष" का कथा केन्द्र लखनऊ है । इसमें स्वतंत्र भारत के बदलते हुए परिवेश में विचारों और धारणाओं के अन्तर्गत नागरिक जीवन का चित्रण किया है । "इस नागरिक जीवन की पुराने से नवीन और नवीन से अति नवीन की ओर घिसटती हुई तस्वीर में ब्याह, गोमती बाढ़, छात्र आन्दोलन और सत्याग्रह, हिन्दू मुसलमान दंगा, हिन्दू-उर्दू-विवाद, हड़ताल, फिल्मी चाल का कीर्तन इत्यादि अनेकानेक दृश्य टांक दिये गये हैं ।" लेखक जीवन की खोज में दृष्टि रूपी कैमरा लिये घूमते हैं ।

किन्तु अरविंद शंकर का परिवार और समाज के दोनों मोर्चों से संघर्ष करता है । वह एक असंतोषी मध्यवर्गीय गृहस्थ है । वह कर्मरत एवं सक्रिय रहना चाहता है फिर भी बाह्य परिस्थितियों से जूझता है । "हिन्दी उपन्यासों में नायक परिस्थितियों से जूझता है , किन्तु अन्त में खोया हुआ दिग्भ्रमित, टूटा हुआ चित्रित किया जाता है , टूटना और टूटते चले जाना उसका जीवन धर्म और " आधुनिकता" का प्रतीक बन जाता है ।"[44] सच तो यह है कि नागर जी ने साठोत्तर युग के व्यक्ति के जीवन को बदलते हुए परिवेश में चित्रित किया है । यही कारण है कि आदर्श, सत्य, प्रतिमान तथा संकल्प पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं । और उन्होंने यह सिद्ध किया है कि युगीन जीवन मूल्यों का अर्जन उद्देश्यहीन, निरर्थक तथा दिशाहीन जीवन का गलत तरीकों में नहीं है बल्कि पूर्व दो सौ वर्षों से चले आ रहे आदर्शों, मर्यादाओं और जीवन-मूल्यों की कड़ी में एक और नयी कड़ी है । यही कारण है कि बूढ़ा सुवुप्त देश गुलामी की बेड़ियों को तोड़ नवोत्थान के नये मार्ग की ओर अग्रसर हो रहा है । अरविन्द शंकर के पूर्वजों का काल संक्रान्ति काल था ।

"अमृत और विष" में आज के बदलते हुए परिवेश का चित्रण अनेक दुर्बलताओं एवं कुण्ठाओं के साथ भी किया है । लेखक ने तरूण पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के द्वंद्व में विघटित जीवन मूल्यों का चित्रण किया है । स्वाधीनता के पश्चात पुरानी मान्यताऐं तथा धारणाएं तरूण वर्ग के समक्ष प्रश्न चिन्ह बनकर खड़ी हुई हैं । युवा वर्ग पुराने मूल्यों को, ढोंग, आडम्बर आदि को नयी दृष्टि

से देख रहा है । नयी पीढ़ी के रमेश, रानी, उमेश, उषा में नये आदर्श तथा संकल्प दिखाई पड़ते हैं । रमेश सामाजिक एवं कुल मर्यादा को तोड़कर ठाकुर घराने की विधवा रानी के साथ प्रेम विवाह करता है । उसके परिवार में रहने वाले व्यक्ति मानसिक तनाव तथा कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं । रानी का पिता उसे हमेश के लिए त्याग देता है । ठाकुर रघु सिंह, डा० आत्मा राम, लाल साहब, वहीदा बेजम, पुत्री जय किशोर आदि पात्र आधुनिक परिवेश को स्वीकारते हैं ।

"अमृत और विष" में नयी पीढ़ी के अन्तर्जातीय विवाह तथा स्वच्छंद प्रेम ने पुराने जीवन-मूल्यों को तोड़ा, पारिवारिक संबंधों में दरारें पड़ी तथा मर्यादा टूटी । यह पुरानी पीढ़ी की उलझन, विवशता, असफलता, अशान्ति ,निराशा, घुटन का चित्रण है । अरविंद शंकर साठोत्तरी काल पर विहंगम, दृष्टिपात करता हुआ युगीन राजनीति, सभ्यता, आदर्श तथा जीवन-मूल्यों की ओर इंगित करता है । वह बाह्य परिस्थितियों में न तो टूटता है न ही हार स्वीकारता है । वह कुंठाग्रस्त दिगभ्रमित होने पर भी मानसिक रूप से स्थिर रहता है । "जीर्ण-शीर्ण उन्नीसवीं शताब्दी के समाप्त होते होते अरविन्द के पुरखों का वृतांत भी समाप्त हो जाता है । इस अंश में उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग सभी महत्वपूर्ण पक्ष आ जाते हैं । और सदानंद जिस नये जमाने की बात करता है , उसी नये जमाने का आधुनिक संस्करण दूसरे उपन्यास का तरूण वर्ग है और इस प्रकार पुराने नये की श्रृंखला टूटती नजर नहीं आती ।"[45] वह प्रारम्भ में महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर कार्यशील होता है । बाद में वह हीनता, घुटन, निराश ग्लानि आदि भावनाओं से भर जाता है ।

आधुनिक भारतीय जीवन के परिपेक्ष्य में तरूण वर्ग का चित्रण अरविंद ने अपने उपन्यास में किया है । तरूण वर्ग दूषित परम्पराओं, नेतागीरी, नौकरशाही, मुनाफाखोरी , धार्मिक अंध विश्वासों तथा सामाजिक जीवन

के पुराने जड़ बंधनों के प्रति विद्रोह किया है । कहा गया है कि देश के विद्यार्थी अनुशासनहीन हो गये हैं किन्तु तरूण वर्ग स्वभाव से आदर्शवादी है । वह जीवन में आदर्शहीन परिस्थितियों में विद्रोह करता है । जबरदस्ती शासन व्यवस्था को बनाये रखने वालों के प्रति तथा राजनीतिक,सामाजिक, धार्मिक ,आर्थिक ढांचें के प्रति आक्रोश अभिव्यक्त करता है । भारत में फैले भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए तरूण वर्ग आगे आता है । वह जीवन के अभावों और अपमानों से लड़ता है । अनेक मान्यताओं, परम्पराओं और विसंगतियों में मूल्यों की टकराहट होती है । द्वितीय महायुद्ध के बाद की राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से पीड़ित युवा वर्ग का एक और वर्ग है, जो उद्देश्यहीन या दिशाहीन भले ही हो किन्तु वे ईमानदारी, न्याय, सच्चाई , तथा समानता की मांग के लिए विद्रोह करते हैं । रमेश अच्छाई तथा जनहित के लिए जीवन संघर्ष करता है ।

उपन्यास में एक वर्ग अंधरूढ़िवादिता, भ्रष्टाचार, का प्रतीक है । तो दूसरा वर्ग रमेश, रानी, खन्ना, कुसुम लता खन्ना, आदि शाश्वत जीवन-मूल्यों को स्वीकारते हैं । लाल साहब तथा वहीदा बेगम शारीरिक वासनाओं के अतृप्त पात्र भी हैं । वे शरीर की भूख मिटाने में शील, पवित्रता,संयम, ब्रह्मचर्य आदि मूल्यों को नकारते हैं । व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों पर बल दिया गया है । धनिक वर्ग का प्रतिनिधि रूपचन्द्र मन्दिर बनवाने में भी रूपया खाता है । पुलिस का भ्रष्टाचार तथा पूंजीपति वर्ग का अत्याचार वर्णित है । नागर जी ने डा० आत्मा राम, रद्दूसिंह तथा लाल साहब के वंशगत प्रसंगों के माध्यम से सामाजिक उत्थान पतन तथा बदलते हुए मानदण्ड मान्यताओं तथा नैतिक मूल्यों का चित्रण किया है । उन्होंने झूठी मान्यताओं और मिथ्या मूल्यों का खण्डन किया । उनकी पीढ़ी के साथ युवा गर्व की मानसिकता, अराजकता, परम्परागत रूढ़िग्रस्तता, भ्रष्टाचार, क्रान्ति स्वार्थता के साथ कोई सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती है । भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के पतन में नववर्ग विक्षुब्ध है । अमृत और विष स्वाधीनता देश के युवा वर्ग का प्रतिनिधि उपन्यास है ।

11- "मंत्र-विद्ध"(1967)

राजेन्द्र यादव का नई पीढ़ियों के उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान है । प्रेत बोलते हैं, "उखड़े हुए लोग" शह और मात सारा आकाश आदि स्वातंत्र्योत्तर युग के उपन्यास हैं । "मंत्रविद्ध" नर नारी के शाश्वत प्रेम को लेकर लिखा है । इसमें तारक और सुरजीत कौर दो प्रेमियों की प्रेम समस्या वासना की पूर्ति तक सीमित है । लेखक ने इस उपन्यास में टूटती हुए नैतिक मूल्यों की मान्यताओं तथा व्यक्तिगत मूल्यों को लेकर लिखा । आज व्यक्तिवादी चेतना का युग है । "स्व" की स्वीकृति और "पर" भावना की अस्वीकृति का चित्रण है । इसमें टूटते हुए सामाजिक, व्यक्तिगत मूल्यों का चित्रण है ।

"मंत्रविद्ध" की कथा वस्तु एक ओर अस्थाई शारीरिक आकर्षण तारक और सुरजीत कौर के रूप में प्रस्तुत की गई है । इसमें तारक तीन बच्चों का पिता होता है , वह वासना या शारीरिक भूख मिटाने के लिए सदियों से चले आ रहे सामाजिक व नैतिक जीवन मूल्यों का पर्दाफास करके एक धनिक पंजाबी और जालिम सरदार की लड़की से चुपके से शादी करके कलकत्ता भाग आते हैं । कुछ निों के बाद उनका मौसमी प्यार हलका होकर आपस में टूट जाता है । दोनों ही मानसिक तनाव और कुण्ठा से भर जाते हैं । वे लौटते समय अलग अलग राहों से आते हैं । "मंत्रविद्ध" के विषय में लेखक ने लिखा है कि "प्यार" मंत्र है और तारक तथा सुरजीत कौर उससे विद्ध हैं । दूसरी ओर उपन्यास में सामाजिक रूप से पति पत्नी का जीवन बिताने वाले इन्दु और मोहन हैं, जिनके पारिवारिक जीवन में स्थायीत्व तो है, किन्तु प्रेम नहीं । यह कहा जा सकता है कि जहां प्रेम है , वह छिछलप्रेम है , जो टिक न सका और वहां प्रेम नहीं तो स्थायीत्व है । दोनों स्थितियों का निर्वाह बड़ी कुशलता से किया है ।

उपन्यास की कथावस्तु के आधार पर यह निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में काम के आधार पर पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन-

मूल्यों का विघटन हुआ । युगीन जीवन-मूल्यों का संकेत करते हुए व्यक्ति-वादी दृष्टिकोण की स्थापना लेखक ने की है । साथ ही प्रेम विवाह से उत्पन्न असंतोष और मनमुटाव की स्थिति का चित्र गहराई से किया और प्रेम की एक स्थिति का विश्लेषण करने में सफलता भी मिली किन्तु वे अपने पात्रों को व्यक्तित्व नहीं दे पाये । इसप्रकार के वैवाहिक जीवन पर व्यंग्य विद्रूप किया है । बदलते हुए व्यक्तिगत नये दृष्टिकोण और आदर्शहीनता तथा मूल्यहीनता का चित्रण तो है किन्तु यह उपन्यास कोई नये मूल्य देने में असमर्थ है । यह उपन्यास ऐसे स्त्री-पुरूष का चित्रण करता है जो क्षणिक आवेश में आते हैं । शारीरिक सुख भोग के लिए जीवन को नरक बना लेते हैं । वे सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं तथा पारिवारिक मर्यादाओं के दायरों को तोड़कर जीवन को विश्रृंखलित कर लेते हैं । यह उपन्यास प्राचीन जीवन-मूल्यों को "काम" के आधार पर तोड़ता अवश्य है किन्तु नये मूल्यों को स्थापित नहीं कर पाता है । यह उल्लेखनीय है कि आत्मरति, दायित्वहीनता, मर्यादाहीनता, दिशाहीनता एवं लक्ष्यहीनता का चित्रण "सेक्स" के आधार पर किया है । आज का युवक क्षणिक भावनाओं में भर कर, सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को तोड़ता है , यह आधुनिक बोध का परिचय है ।

12- "क्यों -फंसे" (1968)

यशपाल कृत "क्यों फंसे" उपन्यास में बदलते हुए परिवेश के साथ बदलते हुए व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों का चित्रण वैयक्तिक "काम कुण्ठा" के आधार पर किया है । स्वच्छंद यौन चेतना के कारण स्त्री पुरूष के संबंध तथा जीवन-मूल्य टूट रहे हैं । व्यक्तिगत चेतना से प्रभावित भास्कर, दरून्निसा, मोना, मोती हेना आदि पात्र आते हैं । इन पात्रों का कोई सामाजिक उत्थान का लक्ष्य नहीं है । और न राष्ट्रीय हित के लिए, ये पात्र आत्मरत हैं ।

"क्यों फंसे" उपन्यास का नायक भास्कर वैयक्तिक यौन वासनापूर्ति अपनी भाभी के साथ करता है । आदर्श तथा मानव मूल्य उनके जीवन में कोई स्थान नहीं रखते हैं । वह "काम" कुण्ठाओं से ग्रस्त होकर अनेक स्त्रियों के संपर्क में आता है । वासना की तृप्ति में जीवन का सार खोजता है । उनके नये व्यक्तिगत दृष्टिकोणों ने सामाजिक बंधनों को नकार दिया है । मनुष्य शारीरिक भूख की तृप्ति के लिए सब कुछ कर सकता है । उपन्यास में न तो कोई उद्देश्य है और न ही किसी उद्देश्य की पूर्ति करता है । आज समाज में सेक्स की स्थिति क्या है ? मनुष्य की यौन संबंधों की दुर्बलताओं का चित्रित किया है । व्यक्ति चेतना के कारण जाति व्यवस्था के नये सामाजिक वर्ग के प्रतिमानों की सृष्टि हुई । मोती विवाहित नारी है । वह यौन संबंधों की पवित्रता तथा नैतिकता को नहीं मानती है और वह पातिव्रत्य और शारीरिक पवित्रता को पुरानी बात कहकर छोड देती है । भास्कार के जीवन में ब्रह्मचर्य तथा आत्म संयम का मूल्य नहीं है । हेना और मोना आधुनिक नारियों की प्रतीक हैं ।[46] वह सामाजिक त्याग, सद्भाव, मानवता, सेवाभाव आदि को भी महत्वहीन समझती हैं ।

उपन्यास में सामाजिक मान्यताएं नये परिधान को लेकर हैं । हेना तथा मोना सन्तान प्राप्ति की कामना, पति सेवा तथा कुल मर्यादा को नहीं स्वीकारती हैं । वे सन्तान प्राप्ति तथा प्रतिसेवा में अपना जीवन व्यतीत करना नहीं चाहती हैं । जबकि ये भारतीय समाज के जीवन-मूल्य रहे हैं । बल्कि वे वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर अन्य पुरुषों के साथ सेक्स का आनन्द लेना चाहती हैं ।[47] वे पति के सहारे अपना जीवन व्यतीत नहीं चाहती हैं ।[48]

आज महानगरों में नारियों आर्थिक धरातल पर आत्म निर्भर रहती हैं । यही कारण है कि वे उन समस्त मूल्यों को नकार रही हैं । नर नारी के शाश्वत मूल्य व्यक्तिगत चेतना के आधार पर टूट रहे हैं । नारी स्वतंत्रता तथा

नई अर्थवत्ता ने भी इन संबंधों को बदला है । साथ ही सामाजिक अन्तर्विरोध ने पुराने संस्कारों को परिवर्तन किया । परिणामत: युवा वर्ग आधुनिक युग बोध के परिप्रेक्ष्य में नये जीवन-मूल्यों की सृष्टि में हैं । बदर परम्परागत जीवन-मूल्यों तथा मान्यताओं से मुक्त जीवन बिताना चाहती है । यह कारण है कि नारी चेतना, पुराने सामाजिक तथा नैतिक बंधनों से बाहर जाने चाहती है । इसीलिए उसके आचार, विचार तथा आदर्श और संकल्प टूट रहे हैं । और वह पारिवारिक जीवन के मूल्य जैसे , मातृत्व, ममता, स्नेह, सेवा आदि को नकार रही है । सामाजिक धरातल पर सेवाभाव, आदर, प्रतिष्ठा, त्याग, परोपकार आदि मूल्यों को नये युग बोध में नकारा जा रहा है ।

समाज में अनेक विसंगतियों तथा अभावों के पनपने के कारण मानव-जीवन में तनाव निराशा, अकेलेपन तथा मनमुटाव की भावना आ गयी है । इससे हमारे पारिवारिक , सामाजिक ,धार्मिक तथा नैतिक मूल्य टूटने लगे । पति पत्नी के एडजस्टन होने की समस्या ने "तलाक" का मूल्य के रूप में स्थान मिला । समाज में विवाह नारी सुरक्षा तथा संतान कीकामना से संबंधित रही किन्तु आज महानगरों के प्रभाव तथा आधुनिक विचारों वाली नारी के जीवन का लक्ष्य "पतिसेवा" तथा संतान कामना नहीं रहा । यह पाश्चात्य प्रभाव हमारे समाज पर रहा है । साठोत्तरी युग के बदलते हुए आदर्शों, तथा संकल्पों को दृष्टि में रखकर लेखक ने यह प्रश्न उठाया है । पुनेया, बदर, वैवाहिक जीवन को नहीं स्वीकारते हैं ।

अत: "क्यों फंसे" उपन्यास में बदलते हुए व्यक्तिगत सामाजिक,नैतिक तथा धार्मिक जीवन-मूल्यों को उद्घाटित किया है । अत: यह उपन्यास सामाजिक, रीति रिवाजों, मान्यताओं तथा मार्यादाओं से परे, व्यक्ति चेतना, नारी स्वातंत्र्य तथा "काम" चेतना का विश्लेषण अर्थगत स्तर पर टूट रहे हैं । हमारे शाश्वत मूल्य यथा - संतान प्राप्ति, नारी धर्म,पतिसेवा

अतिथि सेवा, कुल मर्यादा की प्रतिष्ठा, सेवाभाव, आदर ,त्याग के जीवन मूल्य नये परिवेश में टूट रहे हैं । आज मानव आदर्शहीन तथा मूल्यहीनता की स्थिति में जी रहा है । नयी मानसिकता के साथ नये नैतिक प्रतिमान उभर रहे हैं । पुराने जीवन मूल्यों को नकारा जा रहा है ।

13- "कन्दील और कुहासे"(1969)

गिरिधर कृत "कन्दील और कुहासे" उपन्यास महानगर के परिवेश और नगर बोध से सम्पृक्त है, जिसमें बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में जीवन की विषमता,कुण्ठा, आशा-निराशा के बीच छटपटाते हुये मध्यवर्गीय व्यक्ति के आक्रोश तथा संत्रास का चित्रण हुआ है । साथ ही इसमें मध्यम वर्गीय व्यक्ति के बनते-बिगड़ते चित्र भी प्रस्तुत हुये हैं । लेखक की अन्य कृति "चाँदनी के खंडहर" उपन्यास में भी आधुनिक जीवन की संगतियों-विसंगतियों को उद्घाटित किया गया है ।

"कन्दील और कुहासे" में स्वतंत्रता के पश्चात् बदलते हुए परिवेश में राजनीतिक, सामाजिक, वैयक्तिक, नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की झलक दिखाई देती है , जिससे यह उपन्यास सम्पूर्ण मध्यम वर्ग के परिवार के बिखरते हुये स्वप्नों की तस्वीर बन जाता है । इसमें स्वतंत्रता के पश्चात् कुंठित तथा दिशाहरा वर्ग के जिस व्यक्ति का चित्रण किया गया है , वह है किशु, जो जीवनगत समस्याओं में टूट जाता है किन्तु झुकता नहीं है । उसके स्वप्न आजादी के लिये थे, उसमें उनकी मधुर कल्पनायें थीं, किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् चारों ओर का वातावरण चोर बाजारी, मँहगाई, मुनाफाखोरी, अपमान, बेरोज़गारी, बेकारी, रिश्वतखोरी,घुटन, कुण्ठा, निराशा, दिशाहीनता, अनिश्चितता दृष्टिगोचर होता है । गिरिधर गोपाल ने उपन्यास में पूरे मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का यथार्थ चित्रण किया है ।

उपन्यास की कथा मुख्यतः लखनऊ जैसे बड़े शहर और राजधानी से संबंधित है । उसका नायक किशू आर्थिक विषमताओं से जूझता है । उसे एक क्लर्क के रूप में नौकरी मिलती है , किन्तु बाद में छंटनी होने पर उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है । इससे उसके आत्मसम्मान को ठेस लगती है और वह मानसिक तनाव तथा कुण्ठाग्रस्त और संघर्षरत हो जाता है । किशू का सारा संघर्ष यथार्थ रूप से लेखक ने अभिव्यक्त किया है । प्रासंगिक रूप से गांवों की कथा भी सम्पृक्त है । उपन्यास में आजादी के पश्चात उभरती हुई पीढ़ी की ट्रेजडी है । जिसको बढ़ावा देने में पुरानी पीढ़ी का हाथ है । अच्छाई और ईमानदारी से जीवन व्यतीत करती हुई नयी पीढ़ी को जीवन जरूरत की वस्तुएं उपलब्ध नहीं होती हैं । भ्रष्टाचार ,कालाबाजारी और बेरोजगारी को प्रोत्साहन देने वाली पुरानी पीढ़ी है । इसीलिए पुरानी पीढ़ी के प्रति नयी पीढ़ी का आक्रोश होना स्वभाविक है । उपन्यास में सुरेन्द्र एक ऐसा पात्र है, जो आधुनिक है । वह कुण्ठा, भयानक जीवनगत अनिश्चित जीवन और भटकाव में यह कहने को विवश हो जाता है कि "गाली-गलौच ? यह छोटी चीज़ है , जूतों से बात की जानी चाहिये इन बदमाशों से । इन गद्दारों से ।[40] सुरेन्द्र आधुनिकता के बोध में नये आदर्श तथा संकल्पों को स्वीकारता है । परम्परागत मूल्यों तथा मान्याताओं को स्वीकार नहीं करता है । वह आज का वास्तविक पात्र है । इससे स्पष्ट है कि ऐसी घटनाओं के माध्यम से परम्परागत मूल्यों के विघटन का तथ्य प्रकाश में आता है ।

"कन्दील और कुंहासे" में नयी पीढ़ी का द्वन्द्व दिखाया गया है । लेखक ने व्यक्तिगत संकीर्ण भावभूमि से उठकर मानवीय दृष्टिकोण को अपनाया है । उन्होंने मानव-मूल्यों की स्थापना में योगदान दिया है । किशू का बड़ा भाई किशन, पिता के निधन के बाद घर का सारा दायित्व उसी के कन्धों पर आता है । वह विवह तक नहीं करता है । किशू भी आर्थिक आधार

पर संघर्ष करता है । आजादी के बाद सुख सुविधाएं तथा औषधि सभी को प्राप्त होगी , किन्तु आजादी के बाद तो चारों ओर भ्रष्टाचार है । बेईमानी है , झूठ फरेबों की कमी नहीं है । किशू ईमानदारी तथा अच्छाई के लिए जीवन भर लड़ता है । आजादी न उसे रोटी दे सकी , और न कपड़ा, और न बीमारी के लिए दवाएं । ऐसी स्थिति में वह मानसिक तनावों से भर जाता है । एक ट्रेन से उसकी मृत्यु हो जाती है । इस घटना से नयी पीढ़ी में आक्रोश उत्पन्न होता है । इसमें आधुनिकता के बोध को आंका जा सकता है ।

व्यक्तिगत क्षेत्र में कुछ ऐसे पात्र हैं, जो जीवनगत समस्त समस्याओं को सहन करते हैं, पर झुकते नहीं हैं । "कन्दील और कुंहासे" में जीवन का संघर्ष है । प्रासंगिक रूप से किशू और मीरा का प्रेम प्रसंग भी है । चरित्र की दृष्टि से किशू का चरित्र दुर्बल है । वह हमेशा परिस्थितियों का शिकार होता रहा है ।

अतः स्वतंत्र देश के समाज में बहती हुई अनैतिकता असामाजिकता, आर्थिक विषमता है । राजनीतिक गतिविधियों के कारण भारतीय समाज में समानता, हड़ताल, संगठन आदि नये मूल्यों की सृष्टि हुई । उपन्यास में आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक प्रगति , व्यक्ति चेतना, चीनी आक्रमण, पाकिस्तानी आक्रमण से उद्भूत नये जीवन-मूल्यों का चित्रण हुआ है । समानता ,न्याय और ईमानदारी आदि शाश्वत मूल्यों पर बल दिया है । साथ ही देश की भ्रष्ट नीति तथा नगरी जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत किये । कथावस्तु के आधार पर कहा जा सकता है कि इसमें स्वातंत्र्योत्तर युग के जीवन-मूल्यों का अंकन किया गया है । साठोत्तरीयुग से इसे पूर्णतया संम्पृक्त नहीं किया जा सकता है ।

14-"जंगल" (1969)

अमृत राय ने सुख दुख और भटियाली (1969) लघु उपन्यासों में नारी पुरुष की काम कुण्ठा का यथार्थ अंकन किया है । उन्होंने "जंगल" उपन्यास में को आत्मकथात्मक शैली के द्वारा आधुनिक जीवन की विसंगतियों का चित्रण बदलते हुए जीवन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया है । "जंगल" में समाज के ऐसे व्यक्ति की कहानी है , जो नपुसंक, कायर, आलसी तथा झूठ और फरेबों से भरा हुआ है । हमारा समाज ऐसा है , जिसमें सत्य,धर्म, नैतिक, प्रेम , अच्छाई, तथा ईमानदारी सब कुछ रुपयों की तराजू में तुलती हैं । आज की नैतिकता तथा मानवता से परे व्यक्तिवादी है । वहाँ स्वच्छंद प्रेम वैवाहिक जीवन की नगण्यता, आत्मरति तथा आत्मप्रशंसा की भावना है । कुटिल व्यक्ति अपना कार्य सिद्ध करने के लिए मौके की ताक में रहते हैं । अमृतराय ने समाजगत मूल्यों के स्थान पर व्यक्तिवादी दृष्टिकोण की ओर संकेत किया है । समाज में ऐसे चालबाज व्यक्ति हैं जो भोले-भाले लोगों को लूट रहे हैं, और अपना ही उल्लू सीधा कर रहे हैं ।

"जंगल" उपन्यास आज के स्वार्थी व आत्केन्द्रित व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है । "राजेश्वरदलाल" जो अपने चारों ओर के वातावरण को व्यंग्य व अस्वीकृति से देखता है । वह कथा नायक है । उसी के आसपास लीना, नैना, दीपक, राधाकिशन सेठ, विन्दा, सेठानी, अमल ,लतिका,नीलिमा आदि पात्र घूमते रहते हैं । "राजेश्वर दलाल" अकर्मण्य तथा स्वार्थी व्यक्ति के रूप में है । वह समस्त पारिवारिक मूल्यों को नकारता है । उसकी आधुनिक दृष्टि है । वह सन्तान कामना तथा पत्नी के प्रति कर्तव्य भावना को अर्थहीन समझता है । पत्नी को जीवन खाना, पीना, कपड़ा, सुख चाहिये । पत्नी उसके लिए गर्म बिस्तर करने वाली से अधिक नहीं है । प्रेम तो प्रेमिका से किया जाता है ,कहीं पत्नी से किया जाता है । इसीलिए नीलिमा के

संसर्ग में शराब पीता है । नारी के प्रति आदर तथा संतान की शाश्वत कामना को नकारता है । वह पाश्चात्य विचारों का है । इसलिए वह नसबंदी करवा लेता है । और जीवन का असली आनन्द खोजता है ।

"जंगल" उपन्यास में राजेश्वर आत्मविकास तथा हर कदम पर अपना उल्लू सीधा करता है । लेखक ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध को एक अजीब, असंतोष, अलगाव, अस्वीकार, मूल्यहीनता ,आर्थिक दृष्टि से ग्रस्त तथा नैतिकता के प्रति अनास्था की शताब्दी स्वीकार की है । यहाँ ईमानदारी तथा अच्छाई कहाँ, यहाँ तो सभी अपने अपने कार्य सिद्धि में व्यस्त हैं । समाज के प्रतिमान बदल रहे हैं । समाज में आत्म सिद्धि की भावना ने स्वच्छंद यौन चेता को बढ़ावा दिया है । आज का समाज मूल्यहीनता तथा मर्यादाहीनता की स्थिति में कुंठित हो रहा है ।साठोत्तरी युग के व्यक्ति के सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में अनेक उन्तर्द्वन्द्व तथा विषमताएं आ गयी हैं । "राजेश्वर दलाल" अर्थ लोभी है । वह सेठ के बच्चों को अंग्रेज़ी अध्यापन कराते समय सारी नैतिकता को खूंटी पर टांक देता है । सेठ को अपने स्वार्थता के जाल में फंसाता रहता है । सेठ अंग्रेज़ी भाषा में बच्चों बात करवाने में अपना गौरव समझता है । "राजेश्वर दलाल के झूठे आदर्श तथा आश्वासन उसको अकर्मण्यवादी बना देते हैं । उसके अस्तित्व बोध ने मूल्यों को संकट में डाल दिया है । वह नैना को कमरा बंद करके और उसे अपने जंघाओं पर बिठाकर अंग्रेज़ी अध्यापन कराता है । नैना को अश्लील पुस्तकें लाकर देता है । किशोरावस्था में वह कामुक हो जाती है । वह काम तृप्ति अपने नौकर चिन्दा में देखती है । वह कुल मर्यादा, नैतिकता तथा प्रतिष्ठा का ध्यान न रखती हुई एक जवान जुड़िहारे के साथ भाग जाती है । सेठ जी पर फिल्म का जादू था । वह भी लतिका के सहवास में मग्न है । वह अचानक यह खबर पाकर कुण्ठित, असंतोष, निराश, हताश तथा टूट जाते हैं । एक कुल मर्यादा तथा प्रतिष्ठा का भय है दूसरा लतिका का सहवास में बाधा पहुंची ।

"जंगल" उपन्यास ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक के भोगे गये यथार्थ का

चित्रण है । नारी चेतना है । उसकी काम कुण्ठाओं का यथार्थ वर्णन है । आज के वैज्ञानिक युग में व्यक्ति के आचार-विचार ,प्रतिमान, व्यवहार तथा आदर्श सभी कुछ बदल रहे हैं। परिवर्तित युग के साथ साथ जीवन की परिस्थितियां बदल रही हैं । उनके परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति की अनुभूतियां, अच्छाई, ईमानदारी, तथा संवेदना शीलता बदल रही है । मानव मूल्य बदल रहे हैं, अतः नये युग बोध के साहचर्य में व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल रहा है । बदलते हुए प्रतिमानों का चित्रण जंगल में प्रस्तुत किया गया है ।

15- "सबहिं नचावत राम गोंसाईं" (1970)

पूर्ववर्ती पृष्ठों में भगवती चरण वर्मा कृत उपन्यासों का चित्रण किया जा चुका है । उनमें स्वातंत्र्योत्तर तथा युगीन परिवेश के जीवन-मूल्यों का अंकन किया गया है । "सबहिं नचावत राम गोंसाईं" उपन्यास भी युगगत जीवन-मूल्यों को लेकर चलता है । इसमें अर्थगत विषमता का चित्र प्रस्तुत है। स्वाधीनता पूर्व से लेकर समकालीन तक भारतीय जन-जीवन के बदलते हुए आचार-विचारों, धारणाओं तथा दृष्टिकोणों का अंकन यथार्थरूपेण हुआ है । यह उपन्यास प्रमुख रूप से अर्थगत विषमताओं की गुत्थियां सुलझाता है । देश में पूंजीपतियों , नेताओं, गुण्डाओं, तथा भ्रष्टाचारों का अखाड़ा बना हुआ है । जिसका यह सजीव अंकन करता है । देश में जहां एक ओर राजनीति ने भारतीय जन-जीवन में जागृति उत्पन्न की तो वहीं दूसरी ओर सत्ता लोलुपता, स्वार्थ नीति , दल-बदल , चोरबाजारी, अनुशासनहीनता तथा मूल्यहीनता का बोलबाला हो गया ।

इसकी कथावस्तु अर्थगत समस्या पर आधारित है । घासीराम का पुत्र मेवालाल पिता की आज्ञा के विरुद्ध पुरोहित को दक्षिणामें पांच रूपया देता है । घासी राम मेवालाल पर उबल पड़ता है । मेवा लाल उनसे कहता है कि धर्म के अनुसार यह उचित था । तदुपरांत वह छोटी पूंजी के द्वारा धनपति बन जाता है और मेवा लाल ने धन को धर्म से सम्पृक्त कर दिया । वह मन्दिर

बनवाने के नाम पर जमीन, तथा धन दौलत इकट्ठी कर लेता है । तत्पश्चात् वह धन को राजनीति तथा धर्म से जोड़ता है । उद्योगपति रत्ना के साथ मिल कर पूँजीपति हो जाता है । राधेश्याम परोक्ष रूप से राजनीति का सहारा लेकर सम्पत्ति का संचय करता है । वह गृह मंत्री जबरसिंह से अनेक प्रकार से लाभान्वित होता है । लेखक ने देश के नताओं, अफसरों तथा पूँजीपतियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । यह स्पष्ट है कि वे सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन मूल्यों को अमान्य सिद्ध करके धन संचय में लगे हुए हैं । ये पात्र परम्परागत व्यक्तिगत ,समाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा नैतिक मूल्यों को आर्थिक स्तर पर नकारते हैं ।

इस उपन्यास में मेवालाल, राधेश्याम ,रत्ना, गृह मंत्री जबर सिंह आदि पात्र रूपया का धर्म से जोड़ते हैं । और निजी स्वार्थों की पूर्ति करते हैं । इससे सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ । राधेश्याम गृह मंत्री जबर सिंह के कारण ही पूँजीपति बन जाता है । वे झूठे आदर्शों को अपनाते हैं । इसी प्रकार मुख्यमंत्री जटाशंकर होता है । वह गांधीवादी जीवन-मूल्यों की दुहाई देता है । परन्तु उसकी निष्क्रिय राजनीति और अहंभावना सत्य,कर्म, अच्छाई, कल्याण आदि मूल्यों को नकारती है । इस उपन्यास में कुछ ऐसे भी पात्र हैं, जो परम्परागत जीवन-मूल्यों को अपनाते हैं और उसके पीछे सब कुछ बलिदान कर देते हैं । रामलोचन, कोतवाल तथा गृहमंत्री की पत्नी धनवंत कुँवर हैं । वह अपने पति को अनैतिक कार्यों से रोकती है । वह गंगा देवी के हीरों के सेट को रिश्वत कहकर लौटा देती है । राम लोचन राधे श्याम को गृहमंत्री की बिना आज्ञा के जेल पहुँचा तो देता है , किन्तु उसे नौकरी से त्यागपत्र भी देना पड़ता है । तत्पश्चात् धनवंत कुँवर रामलोचन को अपने पति के विरूद्ध चुनाव क्षेत्र में खड़ा करके, उसे जितवा देती है । यह स्थिति मानव-मूल्यों के प्रति आदर अभिव्यक्त करती है । वे दोनों जीवनभर अच्छाई तथा भलाई के लिए सामाजिक कार्य करते हैं ।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि आज के समाज में जहाँ बेईमानी, जमाखोरी, रिश्वतखोरी, चरित्रहीनता, तथा भ्रष्टाचार परिव्याप्त है तो वहाँ धनवंत तथा रामलोचन जैसे पात्र भी समाज में विद्यमान हैं । अतः आज भी प्राचीन -मूल्यों के प्रति आकर्षण बना हुआ है । सेवाभाव ,भाई चारे, त्याग, न्याय, तथा नैतिक मूल्यों का अंकन इस उपन्यास में मिलता है ।

16- "नाच्यो बहुत गोपाल" (1978)

अमृतलाल नागर ने "नाच्यो बहुत गोपाल" उपन्यास में अन्त्यजों के जीवन को आधार बनाकर उनकी जातिगत भावना तथा हीन-ग्रन्थियों का विश्लेषण किया गया है । आज की निम्न भंगी जाति में कितनी नयी चेतना आ गई है । महात्मा गांधी के प्रयास से निम्न वर्ग को समानता, सद्भाव तथा आत्म विकास की प्रेरणा मिली । उपन्यास में व्यक्तिगत "काम" जीवन कुण्ठा के आधार पर जातीयगत तथा वर्गगत चेतना का अंकन किया है । और भंगी जीवन की संगतियो-विसंगतियों का यथार्थ चित्रण वैयक्तिक सामाजिक धार्मिक तथा नैतिक मान्यताओं के मापदण्डों से मापा है ।

इस उपन्यास में व्यक्तिपरक मूल्यों का अंकन प्रधानतया मिलता है । लेखक भंगी बस्ती में, अभिजात्य परिवार से संबंधित निर्गुनियां के छिपे हुए रहस्यों का उद्घाटन करता है । आरम्भ में निर्गुनियां ब्राह्मण संस्कारों से युक्त थी , वह राव साहब की हवेली के परिवेश में आकर यौन पीड़ित हो जाती है । बबुआ से शारीरिक संबंध स्थापित करने के पश्चात् उसे गर्भ रह जाता है । तदन्तर उसका गर्भपात करवाकर एक बूढ़े महेसुरियाद्दीन ब्राह्मण के साथ ब्याह कर दिया जाता है । जहाँ निर्गुनियां की काम तृप्ति नहीं हो पाती है । चूंकि वह स्वतंत्र विचारों की हो जाती है , इसलिए कामवासना के वशीभूत होकर मोहन नाम भंगी से शारीरिक संबंध स्थापित कर लेती है । उन दोनों को शारीरिक मिलन में असीम आनन्द की प्राप्ति होती है । निर्गुनियां को मोहन छू रहा है , उसके गद्दे उसका मटका, सब कुछ ही, किन्तु

उसे अपवित्र नहीं लगा । बल्कि उसे इस स्पर्श में जीवन की गति, स्वच्छंदता तथा मादकता का अनुभव होता है । उसके सारे नैतिक मूल्य, आचरण व्यवहार परम्परागत, आचार विचार टूट जाते हैं । उसे मोहन के भंगीपन से घृणा नहीं हो रही है । वह संकीर्णता से परे होकर वह जाति बंधन, मान, आदर, कुल मर्यादा तथा आचारण संबंधी मूल्यों सब को एक तरफ रखकर मोहन के साथ भाग जाती है ।

उपन्यास में अनेक पात्र हैं । जिनमें से कुछ परम्परागत संस्कार अपनाये हुये हैं जैसे निर्गुनियां के नाना-नानी तथा मां । तो कुछ स्वच्छंद एवं विकसित युगीन जीवन मूल्य अपनाये हैं यथा - निर्गुणनिया का पिता, तथा राव साहब के घर का माहौल । निर्गुणनियां के भंगी परिवार में पुत्र वधु श्यामली जो दिल्ली में पी०आई०वी० की स्टैनो थी, उसके पुत्र के साथ विवाह करके ईसाई से हिन्दु बन जाती है । वह परम्परागत जीवन-मूल्यों एवं विचारों को नकारती है । इसके अतिरिक्त उपन्यास में "जैकसन, माशूक, टामस, मारियम, वहीदा डाकू, रिशोदेवी, सकुन्तला, गुल्लन, वसन्त लाल मास्टर स्वामी वेद प्रकाशानंद, मसीता, नत्थू आदि हैं । जातिगत संस्कार का हल्का प्रभाव भी इस उपन्यास में चित्रित है । निर्गुणनियां ब्राहमण संस्कारों से पूर्णतया मुक्त नहीं हो पाती तो , मोहन व उसके परिवार द्वारा तरह-तरह की यातनाएं झेलती है । मोहन के मामा-मामी अपना झूठा खिलाते हैं, गांव का पाखाना साफ करवाने के लिये भेजते हैं । उसकी सास अपनी टट्टी उठवाती है । सूअर का मांस पकवाती है, और उसे खाने के लिए कहती है । इन घिनौने व्यवहार से तंग आकर फांसी लगाने लगती है , तो मोहन मरने से पहले शारीरिक भूख मिटाता है , उससे पशुवत् व्यवहार करता है । भंगियों के परिवेश में उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है । वसंत लाल मास्टर इंस्पेक्टर होकर आता है । वह निर्गुनियां के साथ अत्याचार करता है । मोहन प्यार से उसके मुंह में मांस के कौर डालता है तो संस्कार संकोच टूटते हैं । मोहन भंगी, भंगिन सभी में जातिगत नये व्यक्तिगत दृष्टिकोण

तथा नयी चेतना दृष्टिगोचर है । लेखक ने निम्न जाति के भंगी लोगों की कुण्ठाओं ,व्यवहारों, आचारों-विचारों, आदर, स्वाभिमान और ब्राह्मण जाति के प्रति हीनता का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

लेखक ने सामाजिक वर्गों के नये प्रतिमानों का चित्रण भंगी जाति को ले कर किया है । निर्गुनियाँ अतृप्ति काम भावना के कारण मोहन के साथ शारीरिक संभोग करके ब्राह्मणी से मेहतरानी बन गयी , उसके साथ राक्षसी विवाह करती है । उसके साथ समस्त सामाजिक रिश्तेनाते, मर्यादा और आचरण टूटकर एक कोन में रह जाते हैं । उनका कोई नैतिक मानदण्ड नहीं है , किन्तु आज कोई भी औरत अपनी आबरू नहीं लुटवा सकती है ।[50] भंगियों में जो जाति को लेकर हीनता का भाव था, वह धीरे-धीरे टूटता जा रहा है । वे अपना नाम व उपनाम ब्राह्मणों से संबंधित रखते हैं । लेखक ने ब्राह्मण जाति पर एक व्यंग्य किया है । भंगी लोग गाँव तथा शहरों में काम अपनी मर्जी के अनुसार करते हैं । आज उन पर पहले जैसे अत्याचार नहीं होते हैं । उनकी औरतों की इज्जत लूटी नहीं जा सकती है । मोहन जब कभी यह सुन लेता है कि वह ठाकुर की औलाद है तो उसे नफरत सी होती है कि मैं मैल क्यों उठाऊं ।[51] भंगियों में आज समाजवादी चेतना भी परिलक्षित है । वे महात्मा गांधीवादी विचारों आचारों को महत्व देते हैं । भारतीय समाज में महसुरियादीन जैसे ब्राह्मणों पर व्यंग्य कसा है । मुसलमान तथा हिन्दू के अत्याचारों का यथार्थ चित्रण किया है । रिशी देवी हिन्दू जात की थी, गरीबी के कारण दहेज न देने के कारण बूढ़े के साथ ब्याह दी जाती है । विधवा हो जाने पर उसका ससुर प्रेमी बन जाता है , और गर्भ गिरवाना आदि प्रवृत्तियाँ सामाजिक जीवन-मूल्यों को नकारते हुए आधुनिक युग का बोध कराते हैं । आज समाज में नैतिकता मर चुकी है ।

धर्म के नाम पर समाज में जाति बनी, नियम बने और वर्ण-व्यवस्था बनी । आज के युग में सभी टूट रहे हैं । लेखक ने बदलते हुए धार्मिक मूल्यों को धारणा, तथा समाज में बदलते हुए जातिगत आचरण संबंधी मूल्य टूट रहे हैं ।

अतः निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि सदियों से चली आ रही वर्ण व्यवस्था का टूटन, और "अर्थ" तथा "काम" के आधार पर टूटते हुए परम्परागत जीवन-मूल्यों का चित्रण है ।

17- "उत्तरकथा (1979)

नरेश मेहता कृत "उत्तरकथा" उपन्यास प्राचीन जीवन मूल्यों का है । किन्तु बीसवीं शती के परिवेश में बदलते हुए सामाजिक, राजनैतिक ,नैतिक धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों का चित्रण आर्थिक एवं व्यक्तिगत धरातल पर किया है । नरेश मेहता ने "उत्तरकथा" उपन्यास में एक प्रान्त के मध्यमवर्गीय ब्राह्मण के विभिन्न परिवारों का मूल्यांकन राष्ट्रीय स्तर पर किया है । प्राचीन व्यक्तिगत जीवन परिस्थितियों का अंकन आज की बदलती हुई परिस्थितियों में लेखक ने दृष्टिपात किया है । "उत्तरकथा" में मानव मूल्य मर्यादा एवं समकालीन जीवन में सन्निहित आधुनिक संचेतना को व्यक्त कर जीवन के नये परिवेश में नयी संवेदनाओं के साथ नयी मनःस्थितियों को उद्घाटित किया है । बदलते हुए आधुनिक परिवेश के साथ जीवन-मूल्य , आस्थाएं धारणाएं तथा मान्यताएं परिवर्तित हो रही हैं । व्यक्तिगत कुण्ठा तथा तनाव से परिवार टूट रहे हैं । मानवीय नयी परिस्थितियों के विषय में नरेश मेहता कहते हैं --

"हमारी बीसवीं शती के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में आमूल परिवर्तन किया है , फलतः व्यक्ति का निजी और समाज का सामाजिक एक ऐसी दुर्गम विषमता और शून्यता में खड़ा हो गया है , जिसे न तो स्वीकारते बनता और न उससे विमुखते ही आधुनिकता के नाम पर स्वत्व के बिखराव की सीमा यह आ गयी है, अजनबीपन, और एकाकीपन के आदिम भय की आधुनिक मानसिकता से ग्रस्त है । आज की राजनीति तथा राज्य व्यक्ति और समाज की अस्मिता, स्वत्व और मूल्य सब का अपहरण करके सम्पूर्ण वर्चस्व

को ही समस्त कर देने पर तुले हैं । मानवता अँधेरे में मुँह ढके हुए और व्यक्ति की आत्महत्या का पूरे समाज की हत्या मूल्य किसी का नहीं ।"[52] यह उल्लेखनीय है कि इस शती के बदलते हुए मानव मूल्य, प्राचीन और नवीन के द्वन्द्व की स्थिति में है । इस द्वन्द्वात्मक मनःस्थिति ने उसके जीवन की संगतियों-विसंगतियों को प्रभावित किया ।

"उत्तर कथा" की कहानी ब्रह्मण कुल में उत्पन्न रमण आचार्य की बेटी दुर्गा के विवाह से आरम्भ होती है । जहाँ एक ओर विवाह की तैयारियाँ होती हैं तो दूसरी ओर नियति का भीषण प्रकोप है । विवाह के दिन सुबह दुर्गा का भाई जटाशंकर आचार्य की मृत्यु और शाम को राजनारायण की मृत्यु और बारात के आने पर , पिता की मृत्यु हो जाती है । खुशियों का वातावरण दुख के आँसुओं से भर जाता है । ये घटनाएँ हास्यास्पद लगती हैं । दुर्गा की शादी त्र्यम्बक के साथ हो जाती है । वे उज्जैन डोली को लेकर चले जाते हैं । दुर्गा को ससुराल में अनेक यातनाएँ मिलती हैं । सास के अत्याचार अनैतिक लाँछन लगाना, शारीरिक मानसिक कष्ट देना, पिता और पुत्र, माता और पुत्र व दुर्गा के बीच विद्रोह तथा उनके मनःस्थितियों का चित्रण है । उपन्यास में जहाँ एक ओर दुर्गा, रमण आचार्य, गोदावरी, शिवशंकर आचार्य, त्र्यम्बक आदि पात्र पुराने जीवन-मूल्यों को अपनाते हैं , तो दूसरी ओर मनोहरलाल उपाध्याय तथा विशु परम्परागत जीवन-मूल्यों को नकारते हैं । उनके जीवन में कोई आदर्श नहीं है, संकल्प नहीं है, और न सामाजिक जीवन-मूल्यों को स्वीकारते हैं । "उत्तर कथा" में अवैध यौन संबंध मर्यादित हैं । विशु के संपर्क से वसुधरा का गर्भ रह जाता है । इससे पारिवारिक मूल्य तथा प्रतिष्ठा पर आघात लगता है । विशु दुर्गा के साथ अमानवीय कृत्य करने का असफल साहस करता है । दुर्गा विवशताओं, यातनाओं तथा क्रदन से ऊबकर जड़वत हो जाती है । क्षणवादी तथा अस्तित्ववादी विचार धारा उसे सोचने के लिए मजबूर करता है ।

"उत्तर कथा" में धार्मिक ,आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना

व्यक्तिगत रूप से हुई है । गोदावरी तथा शिवशंकर धर्म, पूजा, पाठ और क्षिपरा नदी के किनारे पर करते हैं और उस समय कृष्णा देवी नदी में गिर जाती है तो दुर्गा उसकी जान बचाती है । इन पात्रों में परोपकार, भलाई तथा सद्भाव की भावना है । गोदावरी, दुर्गा, कृष्णा देवी ,शिवशंकर आदि पात्र धार्मिक जीवन-मूल्यों के स्वीकारने पर बल देते हैं । इसमें दान, पुण्य, दक्षिणा, अनुष्ठान, यज्ञोपवीत , भोज, नामकरण, अन्त्येष्टि आदि लोक मान्यताओं व धारणाओं का चित्रण किया है । पूरे उपन्यास में दया, दान, करूणा, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव सहानुभूति आदि व्यक्तिगत तथा धार्मिक मूल्यों का अंकन किया गया है ।

अत:उपन्यास में बीसवीं शती के जीवन-मूल्यों पर बल दिया गया है । न्याय, भलाई, परोपकार, सहिष्णुता, संतोष, दान, पुण्य, धार्मिक तथा नैतिकता, पातिव्रत्य , आदर, प्रेम, ममता, मानवता, कर्तव्य आदि मूल्यों के अंकन के साथ मानवीय समस्त क्रियाकलापों का चित्रण है । व्यक्तिगत सामाजिक, आध्यात्मिक नैतिक तथा राजनीतिक मूल्यों में परिवर्तन युग परिवर्तन के साथ साथ , नयी पीढ़ी के साथ आया है । यह कहा जा सकता है कि इसमें बीसवीं शती के जीवन-मूल्यों का चित्रण हुआ है किन्तु इस उपन्यास को साठोत्तर युग के परिवेश से सम्पृक्त नहीं किया जा सकता है ।

अन्य उपन्यास

जीवन-मूल्यों की दृष्टिकोण से साठोत्तरी उपन्यासों में पुराने खेमे के उपन्यासकारों ने आधुनिक युग के बदलते हुए नये परिवेश में स्त्री, पुरूष को रखकर आज के उच्चवर्गीय या उच्च-मध्यमवर्गीय और मध्यम वर्ग के दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न खोखलेपन तथा बनावटीपन का अंकन किया है । उनके आदर्श , संकल्प, आचरण तथा नैतिक मूल्य टूट रहे हैं । उन्होंने इस तथ्य से भी अवगत कराया है किआज बुद्धिवादियों में भावुकता तथा नैतिकता का कितना अभाव पाया जाता है । नर-नारी के शाश्वत संबंध नवीन

परिस्थितियों के साथ एडजस्ट न कर पाने के कारण नयी मानसिकता उपज रही है और उनके जीवन में असम्बद्धता, अजनबीपन तथा अकेलेपन की भावनाएं उत्पन्न हो गयी हैं । वैज्ञानिक प्रगति के कारण भय, संत्रास, मृत्यु बोध और अस्तित्व की भावना उत्पन्न हो गयी है । इन परिस्थितियों से मानव मूल्य विघटित हो रहे हैं । नये आयामों, नये मूल्यों तथा नयी अभिवृत्तियों का जन्म हो रहा है । नारी स्वतंत्रता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता ने समाजिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यों के स्वरूप को बदल दिया है । कुछ अन्य उपन्यासों में चित्रित जीवन-मूल्यों का अंकन संक्षिप्त में किया जा रहा है :--

नागार्जुन का हीरक जयंती (1961) उपन्यास में राजनीतिक वातावरण है । नागार्जुन ने विभिन्न मतों के अन्तर्गत संश्लिष्ट लोक चेतना को वर्गगत मूल्यांकन किया है । समाज में नैतिकता, धार्मिकता, और मान्यता टूटती जा रही हैं । छूआछूत की बढ़ती हुई समस्या कम हो रही है । शहर से गांव तक परिवेश बदल रहा है । लेखक ने इमरतिया (1968) उपन्यास में बिहार के स्मगलिंग और धार्मिक एवं सामाजिक भ्रष्टाचार की कथावस्तु है । अर्थ के आधार पर उच्च वर्ग की स्वार्थ लोलुपता का यथार्थ चित्रण है । इसमें कहीं सामाजिक ,धार्मिक तथा सांस्कृतिक रीति रिवाज, व परम्पराएं जुड़ती हैं तो कहीं छूटती जा रही हैं । आधुनिक परिवेश में जीवन-मूल्यों का विघटन है ।

भगवती प्रसाद वाजपेयी के दूखन लागे नैन (1967) ,कर्मपथ (1967) तथा टूटते बंधन (1963) उपन्यासों में नारी प्रेम तथा काम समस्या, पारिवारिक विघटन , राजनीतिक गतिविधियों अंकन अर्थगत आधार पर हैं । जिसमें नयी पीढ़ी तथा पुरानी का विद्रोह परिव्याप्त है ।

जैनेन्द्र के मुक्तिबोध (1965) में राजनीतिक कुचालें व्यक्ति स्वार्थ तथा पद लोलुपता में मूल्यहीनता है । अनन्तर (1968) उपन्यास में आधुनिक

जीवन का चित्रण किया है ।

लक्ष्मी नारायण लाल कृत "मन वृन्दावन" उपन्यास (1977) में विशुद्ध प्रेम, धार्मिक, नैतिक, आदर्श ,सद्भाव आदि शाश्वत मूल्यों का अंकन मिलता है । प्रेम अपवित्र नदी (1972) में दिल्ली महानगर के कपूर परिवार के माध्यम से प्रेम, काम, अर्थ , वर्ग, धर्म , समाज तथा व्यक्तिगत समस्याओं का उद्घाटित किया है । बदलते हुए परिवेश में उनके आचार-विचार सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं ।

उदय शंकर भट्ट :- कृत दो अध्याय (1965) में कहीं नये परिवेश में परम्परागत जीवन-मूल्य टूट रहे हैं तो कहीं पात्रों द्वारा स्थापित भी हो रहे हैं । समाज से रूढ़ियों, कुरीतियों, तथा नर नारी के काम-कुण्ठित जीवन का चित्रण किया है । वर्ग संघर्ष तथा नयी पुरानी पीढ़ी का वैचारिक द्वन्द्व है ।

इलाचन्द्र जोशी कृत "ऋतु चक्र" उपन्यास नवीनता लिए हुए है ,इसमें आधुनिक जीवन की संगति-विसंगति तथा काम और अर्थ से संपादित समस्याओं का अंकन किया है । इनके दादा पात्र क्षणवादी तथा अस्तित्ववादी विचार धारा को लेकर चलते हैं । वैचारिक स्तर वे बुद्धिवादी हैं । लेखक ने मानवतावादी जीवन-मूल्यों के प्रति उत्सुकता दिखाई है । इसी कोटि में हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत चारुचन्द्र लेख (1968) उपन्यास आता है ।

नागार्जुन कृत "इमरतिया (1968) में बिहार में स्मगलिंग और धार्मिक एवं सामाजिक भ्रष्टाचार की कथावस्तु है । अर्थ के आधार पर उच्च वर्ग की स्वार्थ लोलुपता का यथार्थ चित्रण है । इसमें कहीं सामाजिक तथा धार्मिक परम्पराएं जुड़ती हैं तो कहीं टूटती हुई दृष्टिगोचर हैं ।

अतः कहा जा सकता है कि सन् 1960 के बाद मानव के समक्ष आर्थिक समस्याएँ इतनी उत्पन्न हो गयी कि उसने नैतिकता को ताक पर रख दिया । यह समस्या शहरों में अत्यधिक हो गयी । व्यक्ति के सामने अपने अस्तित्व

की रक्षा का संकट उपस्थित हो गया । इसका महानगरी जीवन में अधिक तीव्रता के साथ अनुभव किया जाने लगा । शिक्षा, विज्ञान, औद्योगिक प्रगति तथा बढ़ती हुई जनसंख्या ने मानव-जीवन को अस्तव्यस्त कर दिया । फलस्वरूप सदियों चले आ रहे प्राचीन जीवन-मूल्य युगगत समस्याओं के साथ साथ टूटने लगे । इतना अवश्य है कि इस कोटि के उपन्यासकार आदर्शवादी विचारधाराओं को नहीं छोड़ पाये । वे कहीं न कहीं सामाजिक आदर्श से अवश्य जुड़े रहे हैं । इसके आत्म-केन्द्रित हो जाने पर , राजनीति के मूल्यों में विघटन आया है । पूर्ववर्ती राजनीति में परहित, जनसेवा, सहयोग, त्याग, समानता, भलाई आदि राजनीतिक मूल्यों को श्रेय दिया जाता रहा, परन्तु युगगत जीवन में इनका ह्रास होता जा रहा है ।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द्रोत्तर कालीन लेखकों की साठोत्तर कृतियों में यद्यपि सामाजिक, धार्मिक एवं व्यक्तिगत मूल्य तथा राजनीति चेतना परिलक्षित है, तथापि कुछ इनमें कहीं-कहीं मूल्यहीनता तथा कुछ कृतियों में निरी मूल्यहीनता दृष्टिगोचर होती है । हजारी प्रसाद द्विवेदी की कृति "चारु चन्द्रलेख" में परम्परागत मूल्य परिलक्षित होते हैं । "..... सारे उपन्यास में आधुनिक शिक्षित संस्कारों से समावृत वैष्णव दृष्टि से जड़ीभूत मध्य-कालीन धार्मिक और सामाजिक संस्कृति की विवेचन की गई है ।"[53] नरेश मेहता भी अपने "यह पथ बंधु था" "उत्तर कथा" आदि उपन्यासों में समाजगत धार्मिक आध्यात्मिक मूल्य प्रमुख रूप से मिलते हैं, जबकि राजनीतिक मूल्य गौण रूप से दृष्टिगोचर हैं । श्रीधर, सरस्वती, त्र्यम्बक, दुर्गा आदि पात्र परम्परागत जीवन-मूल्यों के प्रति आस्थावान् रहते हैं । इसके साथ साथ इनके उपन्यासों में परिवेशगत जटिलताओं के कारण बिखरते संयुक्त परिवार, आपसी मन-मुटाव, ईर्ष्या, द्वेष आदि का भी चित्रण है । अमृतलाल नागर के "अमृत और विष" तथा "नाच्यौ बहुत गोपाल" उपन्यासों में प्रेमचन्द कालीन

छाप तो है किन्तु जातिगत व्यवस्था कामगत आधार पर टूटती हुई चित्रित है । इनके पात्र सामाजिक, और पारिवारिक मूल्यों को अपनाये हुये तो हैं किन्तु काम-कुण्ठाग्रस्त होने के कारण जातिगत व्यवस्था को अस्वीकारते हैं । "अमृत और विष" में रमेश-रानी नवीन चेतना से ओत-प्रोत हैं, वे समाज - सेवा, साहचर्य, त्याग, न्याय, नारी के प्रति आदर आदि भावना रखते हैं । तथा आत्म राम भी कर्तव्यनिष्ठता, ईमानदारी, दायित्व बोध आदि मूल्यों को स्वीकारता है । इसमें विधवा-विवाह का समर्थन भी दृष्टिगोचर है । "नाच्यो बहुत गोपाल" में यद्यपि जातिगत व्यवस्था टूटती हुई चित्रित है, फिर भी निर्गुनिया अन्त तक अपने पति मोहन मेहतर के प्रति निष्ठावान रहती है , अपना परिवार बनाती है । इस प्रकार इनके उपन्यासों में प्राचीन तथा नवीन दोनों "मूल्य" प्राप्त होते हैं ।

पूर्व विवेचन में कुछ उपन्यासकार ऐसे हैं, जिनकी कृतियाँ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है । इन उपन्यासकारों में यशपाल, नागार्जुन , रांगेय राघव आदि हैं । यशपाल के "बारह घण्टे" और "क्यों फँसे" उपन्यासों में परम्परागत मूल्य कहीं अंकित और कहीं विघटित दृष्टिगोचर हैं । "बारह घण्टे" की विधवा बिन्नी और विधुर फैण्टम प्राचीन मूल्यों को तोड़ते हुए सहानुभूति एवं आत्मनीयता आदि को नवीन रूप से प्रस्तुत करते हैं । जबकि "क्यों फँसे" का भास्कर अन्य स्त्रीयों के साथ शारीरिक सम्पर्क स्थापित कर परम्परागत नैतिक व धार्मिक मूल्यों को नकारता है । इस प्रकार इन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं पारिवारिक धार्मिक , नैतिक आदि मूल्यों का विघटन प्रमुख रूप से चित्रित है । तथा राजनीति विषय मूल्य गौण रूप से विद्यमान है । रांगेय राघव के उपन्यास " आखिरी आवाज" की विषयवस्तु राजनीति पर आधारित है । इसमें वर्गवादी चेतना के दर्शन होते हैं । कहीं कहीं समाजवादी चेतना भी परिलक्षित है । इस उपन्यास में सामाजिक मूल्यों का विघटन राजनैतिक व आर्थिक आधार पर चित्रित है । "जंगल" (अमृतराय) में मूल्यों के प्रति व्यंग्यात्मक तथा अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया है ।

नयना, राजेश्वर, दयाल, सेठी जी व अन्य पात्रों के माध्यम से परम्परागत नैतिक, सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों का विघटन चित्रित किया है ।

व्यक्तिवादी मूल्यों को लेकर चलने वाले उपन्यासकार भगवती चरण वर्मा "प्रश्न-मरीचिका" "सामर्थ्य और सीमा" ने व्यक्तिगत चेतना को काम, अर्थ व राजनीति के आधार पर उभारा है । ये उपन्यास मुख्यत: राजनीतिपरक हैं । इन उपन्यासों में परम्परागत मूल्य कहीं विघटित और कहीं अंकित हैं । "प्रश्न-मरीचिका" के रूपा, उदय, लता, शिवकुमार ,जोखन लाल मेहता, जगपतिया आदि पात्र परम्परागत मूल्यों के प्रति विद्रोह की चेतना परिलक्षित है, जबकि मेलाराम, शिव लोचन शर्मा, परबतिया, आदि पात्र परम्परागत मूल्यों के प्रति आस्थावान हैं ।

फ्रायड के व्यक्तिवादी मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित जैनेन्द्र (मुक्तिबोध) अनन्त) अज्ञेय का " अपने अपने अजनबी), अश्क (शहर में घूमता हुआ आईना) आदि उपन्यासकार हैं । इन उपन्यासकारों के पात्र मनोवैज्ञानिक आधार पर परम्परागत मूल्यों को नकारते हैं । ये उपन्यास व्यक्ति जीवन में फैली एकाकीपन, अजनबीपन घुटन पूर्ण स्थिति का चित्रण करते हैं और परम्परागत सामाजिक मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं ।

अंत में हम कह सकते हैं कि पूर्ववर्ती उपन्यास साहित्य, परम्परागत मूल्यों से प्रभावित तो है, किन्तु परिवेश जटिलताओं से सर्वथा असम्पृक्त नहीं हैं । इन उपन्यासकारों की कृतियों में जीवन का अंकन होते हुये भी जीवनगत चेतना है, जो उन्हें निरन्तर प्रभावित करती रही है ।

-::-

संदर्भ - सूची

1- इन्द्रनाथ मदान : पहचान और परख, पृष्ठ 97

2- इन्द्रनाथ मदान : पहचान और परख, पृष्ठ 97

3- उपरिवत् पृष्ठ 98

4- जैनेन्द्र कुमार : अनन्तर, पृष्ठ 105

5- डा0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 96

6- डा0 रामदरश मिश्र : हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, पृष्ठ 104

7- अज्ञेय : अपने अपने अजनबी पृष्ठ 55

8- उपरिवत् पृष्ठ 70

9- भगवतीचरण वर्मा : सामर्थ्य और सीमा, पृष्ठ 13

10- उपरिवत् पृष्ठ 16

11- उपरिवत् पृष्ठ 17

12- उपरिवत् पृष्ठ 17

13- उपरिवत् पृष्ठ 17

14- उपरिवत् पृष्ठ 49

15- भगवतीचरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 97-98

16- उपरिवत् पृष्ठ 117

17- उपरिवत् पृष्ठ 65

18- उपरिवत् पृष्ठ 65

19- भगवतीचरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 161

20- उपरिवत् पृष्ठ 170

21- उपरिवत् पृष्ठ 65

22- उपरिवत् पृष्ठ 65

23- उपरिवत् पृष्ठ 65

24- उपरिवत् पृष्ठ 94

25- रांगेय राघव : आखिरी आवाज़ पृष्ठ 13

26- उपरिवत् पृष्ठ 340

27- उपरिवत् पृष्ठ 346

28- उपरिवत् पृष्ठ 346
29- उपरिवत् पृष्ठ 346
30- उपेन्द्रनाथ अश्क : शहर में घूमता आईना (भूमिका) - 1
31- उपरिवत् पृष्ठ 1
32- डा० इन्द्रनाथ मदान : आज का हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ 98
33- उपेन्द्रनाथ अश्क : शहर में घूमता आईना, पृष्ठ 157
34- उपरिवत् पृष्ठ 159
35- उपरिवत् पृष्ठ 121
36- डा० मक्खन लाल शर्मा : आलोचना, जनवरी, 1966, पृष्ठ 163
37- यशपाल : बारह घण्टे ,भूमिका
38- उपरिवत् : भूमिका
39- यशपाल : बारह घण्टे पृष्ठ 93
40- उपरिवत् : पृष्ठ 42
41- उपरिवत् : पृष्ठ 104
42- उपरिवत् : पृष्ठ 108
43- उपरिवत् : पृष्ठ 108
44- डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ, पृष्ठ 98
45- डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ, पृष्ठ 98
46- यशपाल: क्यों फँसे , पृष्ठ 103
47- उपरिवत् , पृष्ठ 101
48- उपरिवत् ,पृष्ठ 33
49- गिरिधर गोपाल : कन्दील और कुहासे, पृष्ठ 177
50- अमृत लाल नागर : नाच्यौ बहुत गोपाल, पृष्ठ 21
51- उपरिवत् : पृष्ठ 111
52- नरेश मेहता : उत्तर कथा - भूमिका
53- डा० रमेश कुंतलमेघ : आलोचना : अप्रैल 1964, पृष्ठ 120

-::-